



कर्नाटक सरकार

हिंदी सुमन
प्रथम भाषा हिंदी
Hindi First Language
Part - 2

10

दसवीं कक्षा
Tenth Standard

Karnataka Textbook Society (R.)

6th Cross, Malleshwaram,
Bengaluru - 560 003.

अनुक्रमाणिका



सं.	पाठ	लेखक	विधा	पृ.सं.
11	सदाचार का तावीज	हरिशंकर परसाई	व्यंग्य कथा	1
12	एक कहानी यह भी	मन्नू भंडारी	आत्मकथ्य	14
13	अक्कमहादेवी के वचन	अक्कमहादेवी अनुवादिका: नंदिनी गुंडूराव	वचन (प्राचीन)	26
	संत कवि रैदास	पूरक वाचन		32
14	लोकगीत	भगवत शरण उपाध्याय	निबंध	36
15	समा बंध गया	नगेंद्र भट्टाचार्य	यात्रा वृत्तांत	44
16	सवेरे उठा तो धूप खिली थी।	अज्ञेय	कविता	51
	जो देखकर भी नहीं देखते	पूरक वाचन		58
17	सच्चा धर्म	सेठ गोविंददास	एकांकी	60
18	एक कुत्ता और एक मैना	हजारी प्रसाद द्विवेदी	निबंध	75
19	दोहे	कबीर, बिहारी, वृंद, रहीम	दोहे (प्राचीन)	86
मुहावरे, अलंकार				96

सदाचार का ताबीज

- हरिशंकर परसाई

(आशय: यह कहानी सर्वत्र व्याप्त भ्रष्टाचार पर प्रकाश डालती है। भ्रष्टाचार के शिकंजे में हर कोई फंसा है। शायद ही कोई संस्था या व्यक्ति इस छूत की बीमारी से बचे होंगे। इसके निर्मूलन के लिए अनेक योजनाएँ बनती हैं मगर कागज में ही बंद रह जाती हैं। सदाचार सरकारी आदेशों से, बाहर से थोपा नहीं जा सकता। यह उच्चतम मानवीय मूल्य हृदय की निधि है, जो हृदय से ही निःसृत होती है। इसके अभाव में सारी योजनाएँ निरर्थक बन जाती हैं। लेखक ने सरकारी तंत्र, ढोंगी धर्मगुरु, तथा सरकारी कर्मचारियों पर कड़ी चोट की है।)

एक राज्य में हल्ला मचा कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है। राजा ने एक दिन दरबारियों से कहा - प्रजा बहुत हल्ला मचा रही है कि सब जगह भ्रष्टाचार फैला हुआ है। हमें तो आज तक कहीं नहीं दीखा। तुम लोगों को कहीं दीखा हो तो बताओ।”

दरबारियों ने कहा - ‘जब हुजूर को नहीं दीखा तो हमें कैसे दीख सकता है?’

राजा ने कहा - “नहीं, ऐसा नहीं है। कभी-कभी जो मुझे नहीं दीखता, वह तुम्हें दीखता होगा। जैसे मुझे बुरे सपने कभी नहीं दीखते, पर तुम्हें तो दीखते होंगे।

दरबारियों ने कहा ‘जी, देखते हैं। पर वह सपनों की बात है।

राजा ने कहा - “फिर भी तुम लोग सारे राज्य में ढूँढ़कर देखो

कि कहीं भ्रष्टाचार तो नहीं है। अगर कहीं मिल जाए तो हमारे देखने के लिए नमूना लेते आना। हम भी तो देखें कि कैसा होता है।”

एक दरबारी ने कहा - “हुजूर, वह हमें नहीं दीखेगा। सुना है, वह बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदि हो गई हैं कि हमें बारीक चीज़ नहीं दीखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी ही सूरत बसी है। पर अपने राज्य में एक जाति रहती है जिसे ‘विशेषज्ञ’ कहते हैं। इस जाति के पास कुछ ऐसा अंजन होता है कि उसे आँखों में आँजकर वे बारीक चीज़ भी देख लेते हैं। मेरा निवेदन है कि इन विशेषज्ञों को ही हुजूर भ्रष्टाचार ढूँढ़ने का काम सौंपे।”

राजा ने ‘विशेषज्ञ’ जाति के पाँच आदमी बुलाए और कहा - “सुना है, हमारे राज्य में भ्रष्टाचार है। पर वह कहाँ है, यह पता नहीं चलता। तुम लोग उसका पता लगाओ। अगर मिल जाए तो पकड़कर हमारे पास ले आना। अगर बहुत हो तो नमूने के लिए थोड़ा-सा ले आना।”

विशेषज्ञों ने उसी दिन से छान-बीन शुरू कर दी।

दो महीने बाद वे फिर से दरबार में हाज़िर हुए।

राजा ने पूछा - “विशेषज्ञों, तुम्हारी जाँच पूरी हो गई ?”

“जी, सरकार।”

“क्या तुम्हें भ्रष्टाचार मिला ?”

“जी, बहुत-सा मिला।”

राजा ने हाथ बढ़ाया- “लाओ मुझे बताओ। देखूँ कैसा होता है।”

विशेषज्ञों ने कहा - ‘हुजूर, वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है, अगोचर है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।”

राजा सोच में पड़ गये। बोले - विशेषज्ञो, तुम कहते हो कि वह सूक्ष्म है, अगोचर है और सर्वव्यापी है। ये गुण तो ईश्वर के हैं। तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है ?

विशेषज्ञों ने कहा - “हाँ, महाराज, अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है।

एक दरबारी ने पूछा - “पर वह है कहाँ ? कैसे अनुभव होता है?”

विशेषज्ञों ने जवाब दिया- “वह सर्वत्र है। वह इस भवन में है। वह महाराज के सिंहासन में है।”

“सिंहासन में है !” - कहकर राजा साहब उछलकर दूर खड़े हो गये।

विशेषज्ञों ने कहा - ‘हाँ, सरकार सिंहासन में है। पिछले माह इस सिंहासन पर रंग करने के जिस बिल का भुगतान किया गया है, वह बिल झूठा है। वह वास्तव से दुग्ने दाम का है। आधा पैसा बीच वाले खा गए। आपके पूरे शासन में भ्रष्टाचार है और वह मुख्यतः घूस के रूप में है।”

विशेषज्ञों की बात सुनकर राजा चिंतित हुए और दरबारियों के कान खड़े हुए।

राजा ने कहा - “यह तो बड़ी चिंता की बात है। हम भ्रष्टाचार बिलकुल मिटाना चाहते हैं। विशेषज्ञों तुम बता सकते हो कि यह कैसे मिट सकता है ?”

विशेषज्ञों ने कहा - “हाँ, महाराज, हमने उसकी भी योजना तैयार की है। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे। एक तो भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगे। जैसे ठेका है तो ठेकेदार है। और ठेकेदार है तो अधिकारियों को घूस है। ठेका मिट जाए तो उसकी घूस मिट जाए। इसी तरह और बहुत-सी चीजें हैं। किन कारणों से आदमी घूस लेता है, यह भी विचारणीय है।”

राजा ने कहा - “अच्छा, तुम अपनी पूरी योजना रख जाओ। हम और हमारा दरबार उस पर विचार करेंगे।

विशेषज्ञ चले गए।

राजा ने और दरबारियों ने भ्रष्टाचार मिटाने की योजना को पढ़ा। उस पर विचार किया।

विचार करते दिन बीतने लगे और राजा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। एक दिन एक दरबारी ने कहा - महाराज, चिंता के कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। उन विशेषज्ञों ने आपको झंझट में डाल दिया।”

राजा ने कहा - “हाँ, मुझे रात को नींद नहीं आती।”

दूसरा दरबारी बोला - “ऐसी रिपोर्ट को आग के हवाले कर देना चाहिए जिससे महाराज की नींद में खलल पड़े।”

राजा ने कहा - “पर करें क्या? तुम लोगों ने भी भ्रष्टाचार मिटाने

की योजना का अध्ययन किया है। तुम्हारा क्या मत है ? क्या उसे काम में लाना चाहिए?”

दरबारियों ने कहा - “महाराज, वह योजना क्या है, एक मुसीबत है। उसके अनुसार कितने उलट-फेर करने पड़ेंगे ! कितनी परेशानी होगी। सारी व्यवस्था उलट-पलट हो जाएगी। जो चला आ रहा है, उसे बदलने से नई-नई कठिनाइयाँ पैदा हो सकती हैं। हमें तो कोई ऐसी तरकीब चाहिए जिससे बिना कुछ उलट-फेर किये भ्रष्टाचार मिट जाए।”

राजा साहब बोले - “मैं भी यही चाहता हूँ। पर यह हो कैसे ? हमारे प्रपितामह को तो जादू आता था ; हमें वह भी नहीं आता। तुम लोग ही कोई उपाय खोजो।”

एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया और कहा - “महाराज, एक कंदरा में तपस्या करते हुए इन महान साधक को हम ले आए हैं। इन्होंने सदाचार का तावीज़ बनाया है। वह मंत्रों से सिद्ध है और उसके बाँधने से आदमी सदाचारी हो जाता है।”

साधु ने अपने झोले में से एक तावीज़ निकालकर राजा को दिया। राजा ने उसे देखा। बोले, “हे साधु, इस तावीज़ के विषय में मुझे विस्तार से बताओ। इससे आदमी सदाचारी कैसे हो जाता है?”

साधु ने समझाया, “महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है ; बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की कल फिट कर देता है और

किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी काम करता है। प्रश्न यह है कि जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उन्हें दबाकर ईमान के स्वर कैसे निकाले जाएँ? मैं कई वर्षों से इसी के चिंतन में लगा हूँ। अभी यह सदाचार का तावीज़ बनाया है। जिस आदमी की भुजा पर यह बँधा होगा वह सदाचारी हो जाएगा। मैंने कुत्ते पर भी प्रयोग किया है। यह तावीज़ गले में बाँध देने से कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता। बात यह है कि इस तावीज़ में से सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा बेईमानी के स्वर निकालने लगती है तब इस तावीज़ की शक्ति आत्मा का गला घोट देती है और आदमी को तावीज़ के ईमान के स्वर सुनाई पड़ते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है। यही इस तावीज़ का गुण है, महाराज !”

दरबार में हलचल मच गई। दरबारी उठ-उठकर तावीज़ को देखने लगे।

राजा ने खुश होकर कहा - “मुझे नहीं मालूम था कि मेरे राज्य में ऐसे चमत्कारी साधु भी हैं। महात्मन्, हम आपके बहुत आभारी हैं। आपने हमारा संकट हर लिया। हम सर्वव्यापी भ्रष्टाचार से बहुत परेशान थे। मगर हमें लाखों नहीं, करोड़ों तावीज़ चाहिए। हम राज्य की ओर से तावीज़ों का एक कारखाना खोल देते हैं। आप उसके जनरल मैनेजर बन जाएँ और अपनी देख-रेख में बढ़िया तावीज़ बनवाएँ।”

एक मंत्री ने कहा - “महाराज, राज्य क्यों इस झंझट में पड़े ? मेरा तो निवेदन है कि साधु बाबा को ठेका दे दिया जाए। वे अपनी

मंडली से तावीज़ बनवाकर राज्य को सप्लाई कर देंगे।”

राजा को यह सुझाव पसन्द आया। साधु को तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया गया। उसी समय उन्हें पाँच करोड़ रुपये कारखाना खोलने के लिए पेशगी मिल गई।

राज्य के अखबारों में खबरें छपीं ‘सदाचार के तावीज़ की खोज !’
‘तावीज़ बनाने का कारखाना खुला !’

लाखों तावीज़ बन गए। सरकार के हुक्म से हर सरकारी कर्मचारी की भुजा पर एक-एक तावीज़ बाँध दिया गया।

भ्रष्टाचार की समस्या का ऐसा सरल हल निकल आने से राजा और दरबारी सब खुश थे।

एक दिन राजा की उत्सुकता जागी। सोचा - “देखें तो कि यह तावीज़ कैसे काम करता है।”

वह वेश बदलकर एक कार्यालय गए। उस दिन २ तारीख थी। एक दिन पहले ही तनख्वाह मिली थी।

वह एक कर्मचारी के पास गए और कोई काम बताकर उसे पाँच रुपये का नोट देने लगे।

कर्मचारी ने उन्हें डाँटा - “भाग जाओ यहाँ से ! घूस लेना पाप है !”

राजा बहुत खुश हुए। तावीज़ ने कर्मचारी को ईमानदार बना दिया था।

कुछ दिन बाद वह फिर वेश बदलकर उसी कर्मचारी के पास गए। उस दिन इकतीस तारीख थी - महीने का आखिरी दिन।

राजा ने फिर उसे पाँच का नोट दिखाया और उसने लेकर जेब में रख लिया ।

राजा ने उसका हाथ पकड़ लिया । बोले - मैं तुम्हारा राजा हूँ । क्या तुम सदाचार का तावीज़ बाँधकर नहीं आए ?

“बाँधा है, सरकार, यह देखिए !”

उसने आस्तीन चढ़ाकर तावीज़ दिखा दिया ।

राजा असमंजस में पड़ गए । फिर ऐसा कैसा हो गया !

उन्होंने तावीज़ पर कान लगाकर सुना । तावीज़ में स्वर निकल रहे थे - “अरे आज इकतीस है । आज तो ले ले ।”

याद रखिए ।

- * वर्तमान में भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त है ।
- * अंधविश्वासों में फँसकर भ्रष्टाचार निर्मूलन नहीं कर सकते ।
- * प्रत्येक व्यक्ति को ईमानदारी के साथ काम करना चाहिए ।
- * प्रामाणिकता सदाचार का प्रथम सोपान है ।
- * राजा से लेकर रंक तक सभी भ्रष्ट बन गये तो देश की प्रगति कुंठित हो जायेगी ।
- * पूरे आत्मविश्वास के साथ सदाचार के मार्ग पर कदम रखना चाहिए ।
- * ईमानदारी का स्वर ही आत्मा की पुकार होती है ।

लेखक परिचय : श्रेष्ठ व्यंग्य कहानीकार श्री. हरिशंकर परसाई जी का जन्म १९२४ में हुआ। एम.ए. होने के पश्चात् कुछ दिनों तक आपने अध्यापन कार्य किया। तदनंतर साहित्य सृजन में जुट गए। व्यंग्य उनकी लेखन कला का प्राण है। सभी क्षेत्रों की विसंगतियाँ आपकी कहानियों में प्रतिफलित हुई है। जीवन का कोई भी आयाम परिहास से बच नहीं सका है। उनकी प्रमुख व्यंग्य कहानियाँ - ‘भोलाराम का जीव’, ‘चावल से हीरों तक’, ‘कचरे में’, ‘एक बेकार घाव’, ‘सड़क बन रही है’, ‘पोस्टरी एकता’, ‘भाइयो और बहिनों’, ‘निठल्ले की डायरी’, ‘एक फरिश्ते की कथा’ आदि।

शब्दार्थ -

सदाचार - अच्छा व्यवहार, तावीज़ - यंत्र मंत्र का संपुट जो अनिष्ट से रक्षा के लिए धारण किया जाता है, भ्रष्टाचार - रिश्वतखोरी, घूसखोरी, उत्कोच; हल्ला - शोर, विशेषज्ञ - किसी विषय में तज्ञ, जाननेवाला, अंजन - काजल (जिसे आँखों में लगाने से खोयी हुई वस्तु को देख सकते हैं), छानबीन - ढूँढ़ना, जाँच-परख, खोज़, स्थूल - मोटा, सूक्ष्म - बहुत महीन, अगोचर - न दिखाई देनेवाला, भुगतान - अदा करना, घूस-रिश्वत, कान खड़े होना - चौकन्ना होना, मौका - अवसर, ठेका - कांट्रेक्ट, खलल - बाधा, तरकीब - उपाय, प्रपितामह - पिता के दादाजी, कंदरा - गुफा, साधक - साधु, कल-यंत्र, सुझाव - सलाह, पेशगी - किसी वस्तु के मूल का वह अंश जो काम करनेवाले को दिया जाता है, तनख्वाह - वेतन, आस्तीन - कमीज का बाजू।

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए।

१. राज्य में क्या फैल गया था ?
२. दरबारी किसे देखने के आदी थे ?
३. बारीक चीज़ों को देखने के लिए उपयोगी चीज़ कौन-सी है ?
४. बारीक चीज़ों को कौन देख सकते हैं ?
५. भ्रष्टाचार के निर्मूलन के लिए क्या बनाया गया ?
६. भ्रष्टाचार, सदाचार कहाँ होता है ?
७. तावीज़ कैसा था ?
८. तावीज़ कहाँ तैयार होने लगे ?
९. तावीज़ किनकी भुजाओं पर बाँधे गये ?
१०. तावीज़ से राजा को कौन-सी आवाज़ सुनायी दी ?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए।

१. भ्रष्टाचार के फैलने का हल्ला सुनकर राजा ने क्या किया ?
२. विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार के बारे में क्या-क्या कहा ?
३. व्यवस्था में परिवर्तन कैसे किया जा सकता है ?
४. साधु ने कौन-सा उपाय बताया ?
५. तावीज़ के गुण कौन-से थे ?
६. तावीज़ कहाँ और कैसे बनाया गया ?
७. तावीज़ बांधने का परिणाम क्या हुआ ?

III. संदर्भ के साथ स्पष्ट कीजिए।

१. 'हुजूर को नहीं दीखा तो हमें कैसे दीख सकता है ?'
२. 'उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।'
३. 'इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं।'
४. 'अरे आज तो इकतीस है। आज तो ले ले।'

IV. इसका निराकरण कैसे होगा ?- सोचो और तात्पर्य बताओ-

“आज इकतीस है। आज तो ले ले।”

V. निम्नलिखित उत्तरों में से सही उत्तर चुनकर लिखिए।

१. राज्य में किस बात का शोर मच गया ?
(अ) भ्रष्टाचार (आ) सदाचार (इ) अनाचार (ई) अत्याचार
२. किसके हल्ले के शमन के लिए आदेश दिया गया ?
(अ) कर्मचारी (आ) दरबारी (इ) नौकर (ई) प्रजा
३. विशेषज्ञ लोग बारीक चीजों को देखने लगाते हैं -
(अ) काजल (आ) सुरमा (इ) अंजन (ई) चश्मा
४. भ्रष्टाचार देख नहीं सकते क्योंकि, वह है।
(अ) ईश्वर (आ) स्थूल (इ) अगोचर (ई) गोचर
५. राज्य के शासन में फैला भ्रष्टाचार इस रूप में है -
(अ) घूस (आ) पूस (इ) घूसा (ई) गूस

VI. विलोम शब्द लिखिए।

- (१) भ्रष्टाचार (२) सूक्ष्म (३) गोचर (४) ईमान
(५) असमंजस (६) गुण (७) झूठ

VII. अन्य वचन रूप लिखिए।

सपना	नमूना	आदमी
विशेषज्ञ	कठिनाई	मौका
भुजा	कारखाने	चीज
पैसे	योजना	खबरें,
जाति	आँखें	परेशानी

VIII. अन्य लिंग शब्द लिखिए।

राजा	आदमी	साहब
सदाचारी	भ्रष्टाचारी	

IX. भाववाचक संज्ञा रूप लिखिए।

बुरा	विराट
उत्सुक	सूक्ष्म

X. इन शब्दों में रेखांकित शब्दांश क्या हैं ? बताइए :

अगोचर	प्रपितामह	बेईमान
-------	-----------	--------

XI. वाक्य के प्रकार बताकर, इन वाक्यों का विश्लेषण कीजिए :

१. एक राज्य में हल्ला मचा कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है।
२. मुझे बुरे सपने कभी नहीं दिखते, पर तुम्हें तो दीखते होंगे?
३. मेरा निवेदन है कि इन विशेषज्ञों को ही हुजूर भ्रष्टाचार ढूँढ़ने का काम सौंपें।

XII. वाक्य परिवर्तन कीजिए :

१. विशेषज्ञों ने उसी दिन से छान-बीन शुरू कर दी।
२. हम और हमारा दरबार उस पर विचार करेगा।
३. इन्होंने सदाचार का तावीज़ बनाया है।
४. राजा ने तावीज़ को परखा।

योग्यता विस्तार -

- * भ्रष्टाचार निर्मूलन के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।



एक कहानी यह भी



- मन्नू भंडारी

(आशय: मन्नू भंडारी ने अपने आत्मकथ्य में उन व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में लिखा है जो उनके लेखकीय जीवन से जुड़े हुए हैं। संकलित अंश में मन्नू जी के किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओं के साथ उनके पिताजी और उनके कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का व्यक्तित्व विशेष तौर पर उभरकर आया है, जिन्होंने आगे चलकर उनके लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेखिका ने यहाँ बहुत ही खूबसूरती से साधारण लड़की के असाधारण बनने के प्रारंभिक पड़ावों को प्रकट किया है। सन् '४६-४७' की आजादी की आंधी ने मन्नू जी को भी अछूता नहीं छोड़ा। छोटे शहर की युवा होती लड़की ने आजादी की लड़ाई में जिस तरह भागीदारी की, उसमें उसका उत्साह, ओज, संगठन-क्षमता और विरोध करने का तरीका यहाँ चित्रित है।)



मन्नू भंडारी

जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरू होता है अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के उस दो-मंज़िला मकान से, जिसकी ऊपरी मंज़िल में पिताजी का साम्राज्य था, जहाँ वे निहायत अव्यवस्थित ढंग से फैली-बिखरी पुस्तकों पत्रिकाओं और अखबारों के बीच या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर 'डिक्टेशन' देते रहते थे। नीचे हम सब भाई-बहिनों के साथ रहती थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी व्यक्तित्वविहीन माँ...सवेरे से शाम तक हम सबकी इच्छाओं और पिताजी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर। अजमेर से

पहले पिताजी इंदौर में थे जहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ वे समाज-सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया है जिनमें से कई तो बाद में ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर पहुँचे। ये उनकी खुशहाली के दिन थे और उन दिनों उनकी दरियादिली के चर्चे भी कम नहीं थे। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।

पर यह पितृ-गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव-गान करना है, बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन-सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुँथी हुई हैं या कि अनजाने-अनचाहे किए उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन ग्रंथियों को जन्म दे दिया। मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिताजी की कमजोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी, खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उसकी प्रशंसा ने ही, क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन-भाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई कुछ विशेषता लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का जिक्र करने लगता है तो मैं संकोच से सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने-गड़ने को हो आती हूँ। शायद अचेतन की किसी पर्त के नीचे दबी इसी हीन-भावना के चलते मैं अपनी किसी भी उपलब्धि पर भरोसा नहीं कर पाती...सब कुछ मुझे तुक्का ही लगता है। पिताजी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं

कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखाई देती है...बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक। होश संभालने के बाद से ही जिन पिताजी से किसी-न-किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं...कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में।

पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ। धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी शायद उनमें। पिता जी की हर ज्यादाती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फरमाइश और ज़िद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थी। उन्होंने ज़िदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं...केवल दिया ही दिया। हम भाई-बहिनों का सारा लगाव (शायद सहानुभूति से उपजा) माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका...न उनका त्याग, न उनकी सहिष्णुता। खैर, जो भी हो, अब यह पैतृक-पुराण यहीं समाप्त कर अपने पर लौटती हूँ।

पाँच भाई-बहिनों में सबसे छोटी मैं। सबसे बड़ी बहिन की शादी के समय मैं शायद सात साल की थी और उसकी एक धुँधली-सी याद ही मेरे मन में है, लेकिन अपने से दो साल बड़ी बहिन सुशीला और मैंने घर के बड़े से आँगन में बचपन के सारे खेल खेले सतोलिया, लँगड़ी-टाँग, पकड़म-पकड़ाई, काली-टीलो...तो कमरों में गुड्डे-गुड़ियों के ब्याह भी रचाए, पास-पड़ोस की सहेलियों के साथ। यों खेलने को

हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुजार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था। एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है। बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर कितनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ। इतने वर्षों के अंतराल ने भी उनकी भाव-भंगिमा, भाषा, किसी को भी धुँधला नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गए थे। उसी समय के दा साहब अपने व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पाते ही 'महाभोज' में इतने वर्षों बाद कैसे एकाएक जीवित हो उठे, यह मेरे अपने लिए भी आश्चर्य का विषय था... एक सुखद आश्चर्य का।

उस समय तक हमारे घर में आए दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहस होती थीं। बहस करना पिताजी का प्रिय शगल था। चाय-पानी या नाश्ता देने जाती तो पिताजी मुझे भी वहीं बैठने को कहते। वे चाहते थे कि मैं भी वहीं बैठूँ, सुनूँ और जानूँ कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है। देश में हो भी तो कितना कुछ रहा था। सन् ४२ के आंदोलन के बाद से तो सारा देश जैसे खौल रहा था, लेकिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की तो मुझे दूर-दूर तक कोई समझ नहीं थी। हाँ, क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण, उनकी कुर्बानियों से जरूर मन आक्रांत रहता था।

सो दसवीं कक्षा तक आलम यह था कि बिना किसी खास समझ के घर में होने वाली बहसें सुनती थी और बिना चुनाव किए, बिना लेखक की अहमियत से परिचित हुए किताबें पढ़ती थी। लेकिन सन् ४५ में जैसे ही दसवीं पास करके मैं 'फर्स्ट इयर' में आई, हिंदी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ। सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल...जहाँ मैंने ककहरा सीखा, एक साल पहले ही कॉलेज बना था और वे इसी साल नियुक्त हुई थीं, उन्होंने बाकायदा साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया। मात्र पढ़ने को, चुनाव करके पढ़ने में बदला...खुद चुन-चुनकर किताबें दीं...पढ़ी हुई किताबों पर बहसों की तो दो साल बीतते-न-बीतते साहित्य की दुनिया शरत्-प्रेमचंद से बढ़कर जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा तक फैल गई और फिर तो फैलती ही चली गई। उस समय जैनेंद्र जी की छोटे-छोटे सरल-सहज वाक्यों वाली शैली ने बहुत आकृष्ट किया था। 'सुनीता'; (उपन्यास) बहुत अच्छा लगा था, अज्ञेय

जी का उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' पढ़ा ज़रूर पर उस समय वह मेरी समझ के सीमित दायरे में समा नहीं पाया था। कुछ सालों बाद 'नदी के द्वीप' पढ़ा तो उसने मन को इस कदर बाँधा कि उसी झोंक में शेखर को फिर से पढ़ गई...इस बार कुछ समझ के साथ। यह शायद मूल्यों के मंथन का युग था...पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक, सही-गलत की बनी-बनाई धारणाओं के आगे प्रश्नचिह्न ही नहीं लग रहे थे, उन्हें ध्वस्त भी किया जा रहा था। इसी संदर्भ में जैनैन्द्र का 'त्यागपत्र', भगवती बाबू का 'चित्रालेखा' पढ़ा और शीला अग्रवाल के साथ लंबी-लंबी बहसें करते हुए उस उम्र में जितना समझ सकती थी, समझा।

शीला अग्रवाल ने साहित्य का दायरा ही नहीं बढ़ाया था बल्कि घर की चारदीवारी के बीच बैठकर देश की स्थितियों को जानने-समझने का जो सिलसिला पिताजी ने शुरू किया था, उन्होंने वहाँ से खींचकर उसे भी स्थितियों की सक्रिय भागीदारी में बदल दिया। सन् ४६-४७ के दिन...वे स्थितियाँ, उसमें वैसे भी घर में बैठे रहना संभव था भला? प्रभात-फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस, भाषण हर शहर का चरित्र था और पूरे दमखम और जोश-खरोश के साथ इन सबसे जुड़ना हर युवा का उन्माद। मैं भी युवा थी और शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया था। स्थिति यह हुई कि एक बवंडर शहर में मचा हुआ था और एक घर में।

यश-कामना बल्कि कहूँ कि यश-लिप्सा, पिताजी की सबसे बड़ी दुर्बलता थी और उनके जीवन की धुरी था यह सिद्धांत कि व्यक्ति को कुछ विशिष्ट बन कर जीना चाहिए...कुछ ऐसे काम करने चाहिए कि समाज में उसका नाम हो, सम्मान हो, प्रतिष्ठा हो, वर्चस्व हो।

इसके चलते ही मैं दो-एक बार उनके कोप से बच गई थी। एक बार कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि पिता जी आकर मिलें और बताएं कि मेरी गतिविधियों के कारण मेरे खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों न की जाए? पत्र पढ़ते ही पिता जी आग-बबूला। यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी...पता नहीं क्या-क्या सुनना पड़ेगा वहाँ जाकर! चार बच्चे पहले भी पढ़े, किसी ने ये दिन नहीं दिखाया। गुस्से से भन्नाते हुए ही वे गए थे। लौटकर क्या कहर बरपा होगा, इसका अनुमान था, सो मैं पड़ोस की एक मित्र के यहाँ जाकर बैठ गई। माँ को कह दिया कि लौटकर बहुत कुछ गुबार निकल जाए, तब बुलाना। लेकिन जब माँ ने आकर कहा कि वे तो खुश ही हैं, चली चल, तो विश्वास नहीं हुआ। गई तो सही, लेकिन डरते-डरते। सारे कॉलेज की लड़कियों पर इतना रौब है तेरा...सारा कॉलेज तुम तीन लड़कियों के इशारे पर चल रहा है? प्रिंसिपल बहुत परेशान थी और बार-बार आग्रह कर रही थी कि मैं तुझे घर बिठा लूँ, क्योंकि वे लोग किसी तरह डरा-धमकाकर, डाँट-डपटकर लड़कियों को क्लासों में भेजते हैं और अगर तुम लोग एक इशारा कर दो कि क्लास छोड़कर बाहर आ जाओ तो सारी लड़कियाँ निकलकर मैदान में जमा होकर नारे लगाने लगती हैं। तुम लोगों के मारे कॉलेज चलाना मुश्किल हो गया है उन लोगों के लिए। कहाँ तो जाते समय पिताजी मुँह दिखाने से घबरा रहे थे और कहाँ बड़े गर्व से कहकर आए कि यह तो पूरे देश की पुकार है...इस पर कोई कैसे रोक लगा सकता है भला? बेहद गद्गद स्वर में पिताजी यह सब सुनाते रहे और मैं अवाक्। मुझे न अपनी आँखों पर विश्वास हो रहा था, न अपने कानों पर। पर यह हकीकत थी।

एक घटना और। आज़ाद हिंद फौज के मुकदमे का सिलसिला था। सभी कॉलेजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान था। जो-जो नहीं कर रहे थे, छात्रों का एक बहुत बड़ा समूह वहाँ जा-जाकर हड़ताल करवा रहा था। शाम को अजमेर का पूरा विद्यार्थी-वर्ग चौपड़; (मुख्य बाज़ार का चौराहा) पर इक्कट्ठा हुआ और फिर हुई भाषणबाजी। इस बीच पिताजी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिताजी की लू उतारी, और पिताजी सारे दिन भभकते रहे, “बस, अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ। बंद करो अब इस मन्नू का घर से बाहर निकलना।”

इस सबसे बेखबर मैं रात होने पर घर लौटी तो पिताजी के एक बेहद अंतरंग और अभिन्न मित्र ही नहीं, अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित डॉ. अंबालाल जी बैठे थे। मुझे देखते ही उन्होंने बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया, आओ, आओ मन्नू। मैं तो चौपड़ पर तुम्हारा भाषण सुनते ही सीधा भंडारी जी को बधाई देने चला आया। ‘आई एम रिअली प्राउड ऑफ यू’...क्या तुम घर में घुसे रहते हो भंडारी जी...घर से निकला भी करो। ‘यू हैव मिस्ड समथिंग’, और वे धुआँधार तारीफ करने लगे वे बोलते जा रहे थे और पिताजी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था। भीतर जाने पर माँ ने दोपहर के गुस्से वाली बात बताई तो मैंने राहत की साँस ली।

सन् ४७ के मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलेज वालों ने नोटिस थमा दिया लड़कियों को भड़काने और कॉलेज का अनुशासन

बिगाड़ने के आरोप में। इस बात को लेकर हुड़दंग न मचे, इसलिए जुलाई में थर्ड इयर की क्लासेज़ बंद करके हम दो-तीन छात्राओं का प्रवेश निषिद्ध कर दिया।

हुड़दंग तो बाहर रहकर भी इतना मचाया कि कॉलिज वालों को अगस्त में आखिर थर्ड इयर खोलना पड़ा। जीत की खुशी, पर सामने खड़ी बहुत-बहुत बड़ी चिर प्रतीक्षित खुशी के सामने यह खुशी बिला गई।

शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि...१५ अगस्त १९४७.

याद रखिए।

- * प्रत्येक व्यक्ति पर किसी दूसरे व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का प्रभाव अवश्य पड़ा रहता है।
- * मन्नू भंडारी जी के व्यक्तित्व पर मुख्यतः उनके पिता का और प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव पड़ा है।
- * मन्नू भंडारी जी ने अपने अध्ययन के समय में राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया था।
- * आजकल पड़ोस कल्चर की कमी महसूस हो रही है।

लेखक परिचय : मन्नू भंडारी जी हिंदी की सुप्रसिद्ध कहानीकार हैं। आपका जन्म ३ अप्रैल १९३१ को मध्यप्रदेश में मंदसौर जिले के भानापुरा गाँव में हुआ। इनका बचपन का नाम महेन्द्रकुमारी था। इनके पिता सुख संपत्तराम भी जाने माने लेखक थे। आपको लेखन संस्कार विरासत में मिला है।

आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं - एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, नायक खलनायक विदूषक (कहानी संग्रह) आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, एक इंच मुस्कान और कलवा, एक कहानी यह भी (उपन्यास) रजनी, निर्मला, स्वामी दर्पण (पटकथाएँ) बिना दीवारों का घर (नाटक)।

शब्दार्थ :

निहायत - अत्यधिक, ओहदा - पद; स्थान, दरियादिली - उदारता, अहंवादी - घमंडी, भग्नावशेष - खण्डहर; टूटेफूटे हिस्से विस्फारित - बढ़ना, और अधिक फैलना, हाशिया - किनारा; खामी - कमी, तुक्का - बिना फल का बाण, शक्की - राक रखनेवाला, ज्यादाती-अधिकता, शिद्दत-कठोरता, वजूद - सुघड - चतुर; कुशुल, नुखा - नकल, अहमियत - महत्ता, ककहरा - क से ह तक अक्षर; वर्णमाला, बाकायदा - नियमित रूप से, बवंडर -तूपान, धुरी - अक्ष; पथ, वर्चस्व - कांति कहर - आफत; विपत्ति, गुबार - मन में दबाया हुआ क्रोध दकियानूसी - अंध परंपरा को माननेवाला, भटियारखाना - रेस्तराँ; सराय, शगल - मन बहलाव

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. मन्नू भंडारी जी का जन्म कहाँ हुआ ?
२. मन्नू भंडारी जी के पिता को किस कार्य से अजमेर आना पड़ा ?
३. भंडारी जी बचपन में कैसी थी ?
४. मन्नू जी को सुखद आश्चर्य देनेवाला विषय कौन-सा था ?
५. शीला अग्रवाल कहाँ काम कर रही थीं ?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. लेखिका के अजमेर के घर का परिचय कराइए ।
२. पिताजी का शक्की स्वभाव मन्नूजी में कैसे दिखाई दे रहा है ?
३. माताजी के कौन-से गुण मन्नू जी के ऊपर प्रभाव नहीं डाले थे ?
४. शीला अग्रवाल ने मन्नू जी को साहित्य की ओर कैसे आकृष्ट किया ?
५. अंबालाल जी ने मन्नू जी की तारीफ कैसे की ?

III. चार पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. लेखिका के अनुसार उनके पिता के कौन-से गुण उनमें समा गये हैं ?
२. शीला अग्रवाल ने लेखिका को किस प्रकार प्रभावित किया ?
३. लेखिका ने राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी भूमिका कैसे निभाई ?
४. कॉलेज से लौटकर पिता जी ने मन्नू जी की तारीफ कैसे की थी ?

IV. विलोम शब्द लिखिए :

सकारात्मक, उचित, सुखद, आज्ञादी, सम्मान, अंश

V. बहुवचन रूप लिखिए :

बहस, छाप, लेखिका, हड़ताल, ओहदा, कोश

VI. विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

महानगर, भाई-बहन, त्यागपत्र, राजनीति, किशोरावस्था, दोपहर

VII. विच्छेद करके संधि का नाम लिखिए :

किशोरावस्था, महत्वाकांक्षा, स्वागत, अत्यंत, मन्वन्तर, पित्रार्जित

VIII. 'आई' एक प्रत्यय है। इस प्रत्यय से जुड़े दस शब्द लिखिए :

उदा : पढ़ + आई = पढ़ाई

IX. मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

हाथ-बँटाना, बाल-बाल बचना, आग से खेलना, नौ दो ग्यारह होना, घोड़े बेचकर सोना, ईद का चाँद होना

X. भाववाचक संज्ञा लिखिए :

व्यक्ति, अपना, गंभीर, बुरा, वीर, उचित

योग्यता विस्तार

* स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेनेवाली महिलाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।



अक्कमहादेवी के वचन



कन्नड मूल - अक्कमहादेवी

(आशय: कन्नड भाषा की श्रेष्ठ महिला वचनकारों में अक्कमहादेवी का नाम आदर के साथ लिया जाता है । उनके प्रस्तुत वचनों द्वारा ईश्वर पर अनन्य भक्ति तथा ज्ञानियों के साथ रहने से होनेवाले लाभों का मार्मिक वर्णन मिलता है।)



अक्कमहादेवी

(1)

मुरझाये फूल में सुगंधि कौन ढूँढ़ेगा ?
बच्चे में कौन खोट देखेगा ?
हे देव ! विश्वास को ठेस लगने पर
फिर से सद्गुण कौन परखेगा ?
हे प्रभु, जले पर कौन नमक छिड़केगा
सुनो, हे चन्नमल्लिकार्जुन
नदी पार करने के बाद मल्लाह को कौन पूछेगा ?

(2)

अज्ञानियों से स्नेह करना
मानो पत्थर से चिनगारी निकालना है।
ज्ञानियों का संग करना,
मानो दही मथकर माखन पाना है
हे चन्नमल्लिकार्जुन प्रभु,
तुम्हारे भक्तों का संग करना
मानो कर्पूरगिरि की ज्योति को पाना है।

(३)

भूख लगी तो गाँव में भिक्षान्न है,
प्यास लगी तो तालाब - कुएँ हैं,
शीत से बचने जीर्ण वस्त्र हैं,
सोने के लिए उजड़े मंदिर हैं,
हे चन्नमल्लिकार्जुन प्रभु,
मेरा आत्म-सखा तू ही है।

- अनुवादिका : डॉ. नंदिनी गुंडूराव

कवयित्री परिचय : अक्कमहादेवी कन्नड की अनन्य शिव शरणा है। १२ वीं शती में कन्नड में जो वचन आंदोलन हुआ, उसमें अक्कमहादेवी का नाम बसवेश्वर, अल्लम प्रभु, सिद्धराम जैसे शरणों के साथ आदर से लिया जाता है। अक्कमहादेवी महान भक्तिन एवं रहस्यवादी कवयित्री थीं। चन्नमल्लिकार्जुन को इन्होंने पति के रूप में स्वीकार करके अपनी साधना की। चन्नमल्लिकार्जुन उनके वचनों का अंकित नाम है। इनके सैकड़ों वचन हैं। हिंदी में जो स्थान मीरा का है वही स्थान कन्नड में अक्कमहादेवी का है।

परिचय : डॉ. नंदिनी गुंडूराव हिंदी और कन्नड की लेखिका तथा अनुवादिका हैं। आप कर्नाटक विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापिका रहीं। आपने अक्कमहादेवी के कन्नड वचनों का सुंदर अनुवाद किया है।

शब्दार्थ :

खोट-दोष, दुर्गुण; मल्लाह-नाविक, केवट; जीर्णवस्त्र-फटे कपड़े, उजड़े-टूटे-फूटे

वचनों का सार :

१. अक्कमहादेवी के वचनों में नीति एवं वास्तविकता का संगम मिलता है। वे अपने वचनों के द्वारा निरर्थक जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहती हैं - मनुष्य मुरझाए फूल में कभी भी सुगंध को ढूँढ़ने का प्रयास नहीं करेगा। बच्चे में सच्चाई है या बुराई है, देखने का प्रयास कोई नहीं करेगा। अक्कमहादेवी कहती हैं विश्वास में धक्का लगने के बाद फिर से सद्गुण दिखाई देने पर कोई विश्वास नहीं करेगा। कोई पहले ही दुखी है और भी उसे दुखी करने का कौन प्रयास करेगा? हे मेरे भगवान, सुनो जब इस संसार रूपी नदी पार करने पर उस मल्लाह रूपी भगवान को कौन याद करेगा अर्थात् सभी पथ-प्रदर्शक को भूल जायेंगे। यही आज की स्थिति है।
२. अक्कमहादेवी अपने वचन में बुराइयों में भी अच्छाई पाने का आशय व्यक्त करते हुए कहती हैं-अज्ञानियों से स्नेह करने से स्वयं की वृद्धि होती है क्योंकि उन्हें सुधारते-सुधारते स्वयं बहुत कुछ सीख जाते हैं। यहाँ पत्थर अर्थात् अज्ञानी, चिनगारी अर्थात् उसे सशक्त बनाना। ज्ञानियों का संग करने से हम सुलभ रूप से ज्ञानी बन जाएँगे। जैसे दही के मथने से माखन निकल आता है। अक्कमहादेवी अपने प्रभु की प्रशंसा करते हुए कहती हैं-तुम्हारे

भक्तों का संग करना कर्पूर-पर्वत की ज्योति को पाने के समान है।
(कर्पूर का एक टुकड़ा जलाने पर ही कितनी ज्योति मिलती है)

३. अक्कमहादेवी इस वचन में स्वयं को धन्य मानती हुई कहती हैं कि-प्रभु, आपके सामने कोई भी गरीब नहीं है। इसकी पुष्टि में वे कहती हैं यदि भूख लगी तो गाँव में अन्न देनेवाले हैं। प्यास लगती है तो पानी की कमी नहीं है क्योंकि इधर-उधर तालाब, कुएँ हैं। तुम्हारी कृपा से ठंड से बचने के लिए फटे वस्त्र मिले हैं। सोने के लिए उजड़े मंदिर हैं। हे प्रभु! तुम्हारा संग ही मेरे जीवन का सौभाग्य है। आपके बिना मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है। तू ही मेरा प्रिय आत्म-सखा है।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. अक्कमहादेवी के कन्नड वचनों का अनुवाद हिंदी में किसने किया है ?
२. खोट किनमें नहीं रहता ?
३. चन्नमल्लिकार्जुन प्रभु के भक्तों का संग करना किसे पाने जैसा है?
४. शीत से बचने के लिए क्या उपाय है ?
५. प्रभु में आस्था रखनेवालों को सोने के लिए क्या सुविधा है?
६. सद्गुणों को कब परखा नहीं जाता ?
७. अज्ञानियों का स्नेह करना किसके समान है

II. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. जले पर नमक छिड़कने का अर्थ क्या है ?
२. संग करने के संबंध में अक्कमहादेवी के क्या विचार हैं ?

III. भाव स्पष्ट कीजिए :

अज्ञानियों से स्नेह करना
मानो पत्थर से चिनगारी निकालना है।
ज्ञानियों का संग करना,
मानो दही मथकर माखन पाना है
हे चन्नमल्लिकार्जुन प्रभु,
तुम्हारे भक्तों का संग करना
मानो कर्पूरगिरि की ज्योति को पाना है।

IV. जोड़कर लिखिए :

अ	आ
१. फूलों में	माखन पाना
२. भगवान पर	प्यास बुझाना
३. ज्ञानियों का	सुगंध बसी है
४. दही मथकर	विश्वास रखना
५. तालाब-कुओं से	संग करना

V. सभी प्रकार के फूलों में कोई-न-कोई गंध होती है, मगर सबमें सुगंध नहीं होती। अब अपने अनुभव से कोई पाँच सुगंधित फूलों का नाम लिखिए ।

VI. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

- | | |
|--------------------|--------------------|
| १. फूल - _____ | ६. संग - _____ |
| २. विश्वास - _____ | ७. गिरि - _____ |
| ३. नदी - _____ | ८. गाँव - _____ |
| ४. मल्लाह - _____ | ९. शीत - _____ |
| ५. पत्थर - _____ | १०. वस्त्र - _____ |

VII. संग करने से पहले खूब सोचना-समझना चाहिए। आप किस प्रकार के मित्र का संग करना चाहते हैं ? इसके लिए कोई चार कारण लिखिए। जैसे-मेरा मित्र अनुशासन के साथ काम करता है।

१. _____
२. _____
३. _____
४. _____

योग्यता विस्तार :

* हिंदी साहित्य में मीराबाई की रचना पढ़िए तथा अक्कमहादेवी की रचनाओं के साथ तुलना कीजिए ।



पूरक वाचन

संत कवि रैदास

संत कवि रैदास का जन्म काशी के पास गाँव में माघ पूर्णिमा के दिन हुआ था। कहा जाता है कि उस दिन रविवार था इसलिए नवजात शिशु का नाम रविदास रखा गया जो बोल-चाल की भाषा में 'रहदास' या 'रैदास' हो गया। स्वामी रामानंद के प्रमुख बारह शिष्यों में महान संत कबीर के साथ संत कवि रैदास का नाम भी बड़ी श्रद्धा के साथ लिया जाता है।

रैदास एक चर्मकार परिवार में पैदा हुए थे। नगर के बाहर ही सड़क के किनारे उन्होंने एक छोटी - सी कुटिया बना ली थी। यहाँ रहकर वे भगवान की भक्ति करते, भजन गाते और आजीविका के लिए जूते बनाते या उनकी मरम्मत करते, उनके पास भगवान की एक सुंदर चतुर्भुजी मूर्ति थी जिसे वे हमेशा अपने पास रखते थे। एक किंवदंती के अनुसार रैदास के पड़ोस में एक पंडित था, वह भगवान की चतुर्भुजी मूर्ति को प्राप्त करना चाहता था। उसने रैदास से कहा, तुम हमेशा चमड़े का काम करते हो। तुम से इस मूर्ति की सेवा-पूजा ठीक से नहीं हो रही है और न ही हो सकती है। इसलिए इसे मुझे दे दो। रैदास बोले, पंडित, तुम केवल नाम के पंडित हो। तुम भक्ति भावना से पूजा नहीं करते। इसीलिए यह मूर्ति तुम्हारे पास नहीं रह सकती।

रैदास की बात पंडित को बुरी लगी। वह स्थानीय राजा के पास गया और कहने लगा, महाराज, आपके राज्य में अधर्म हो रहा है।

देखिए, रैदास जैसे लोग भगवान की पूजा कर रहे हैं। यदि यह चलता रहा तो आप के राज्य पर संकट आ सकता है। पंडित की बात सुनकर राजा ने रैदास को मूर्ति के साथ दरबार में बुलाया और कहा, रैदास, तुम यह मूर्ति इस पंडित को क्यों नहीं दे देते?

राजा की बात सुनकर रैदास ने अपनी मूर्ति को सबके सामने रख दिया और कहा, महाराज, यदि यह पंडित भगवान का सच्चा भक्त है तो यह अपने भक्ति-भाव या तंत्र-मंत्र से मूर्ति को अपने पास बुला ले। रैदास की बात सुनकर पंडित ने कई मंत्र पढ़े और भजन गाए परंतु मूर्ति ज़रा भी न हिली। तब राजा ने कहा, अच्छा रैदास, अब तुम बुलाओ मूर्ति को अपने पास। रैदास ने सबके सामने भक्ति भाव से भजन गाया-

“नरहरि चंचल है मति मेरी, कैसे भक्ति करूँ मैं तेरी”

जैसे ही रैदास का भजन पूरा हुआ वह मूर्ति उछलकर रैदास की गोद में आ गिरी। यह देखकर पंडित तो दरबार छोड़कर भाग गया। राजा ने रैदास के चरण पकड़ लिए और वे उनके शिष्य बन गए।

एक बार एक सेठ रैदास के पास अपने जूते सिलवाने के लिए आया। वह गंगास्नान के लिए जा रहा था। बातों ही बातों में सेठ ने रैदास से भी गंगास्नान के लिए चलने को कहा तो रैदास ने कहा, सेठजी, आप जाइए, हम गरीब लोगों के लिए तो हमारा काम ही गंगास्नान है।

रैदास की बातें सुनकर सेठ बोला, तुम्हारा उद्धार भला कैसे हो सकता है? तुम तो हमेशा काम में ही लगे रहते हो, कभी कोई धर्म-कर्म भी किया करो। रैदास ने अपनी जेब से एक सुपारी निकाली

और कहा सेठजी आप तो गंगास्नान के लिए जा ही रहे हैं। कृपया आप मेरी यह सुपारी भी ले जाएँ और गंगा मैया को भेंट कर दें। परंतु याद रखिए, अगर गंगा मैया हाथ फैलाकर मेरी सुपारी लें तभी भेंट कीजिए नहीं तो मेरी सुपारी लौटा लाइए। सेठ ने रैदास से उसकी सुपारी तो ले ली परंतु मन ही मन रैदास का मज़ाक बनाने लगा।

दूसरे दिन सेठ ने गंगास्नान के लिए प्रस्थान किया। गंगाजी की पूजा के बाद उसे रैदास की सुपारी की याद आई। उसने गंगा मैया से कहा हे गंगा मैया, आप हाथ फैलाएँ तो मैं आपको रैदास की सुपारी भेंट करूँ। तभी एक चमत्कार हुआ। गंगा मैया ने हाथ फैलाकर रैदास की सुपारी स्वीकार की और उसके बदले में एक स्वर्ण कंकण दिया और कहा, यह मेरे प्रिय भक्त रैदास को दे देना।

यह सब देख-सुनकर सेठ आश्चर्यचकित हो गया। वह जब लौट रहा था तब उसने सोचा कि इस स्वर्ण कंकण का रैदास क्या करेगा। यदि मैं इसे राजा को भेंट करूँ तो बहुत-सा धन पुरस्कार स्वरूप मिल सकता है। इसलिए वह सीधा राजभवन गया। राजा को स्वर्ण कंकण भेंटकर, पुरस्कार प्राप्त किया और घर लौट आया।

राजा ने वह कंकण अपनी रानी को दिया। रानी ने कहा, कंकण तो अद्वितीय है परंतु इसका जोड़ा होना चाहिए। राजा ने सेठ को बुलाया और कहा, एक कंकण तो पहना नहीं जा सकता इसलिए ऐसा ही एक कंकण और लेकर आइए। राजा की बात सुनकर सेठ के तो होश उड़ गए। वह वहाँ से सीधा रैदास के पास आया और सारी कहानी सुनाकर कहने लगा, भैया, अब तुम ही मेरी जान बचा सकते हो। तुम मेरे साथ गंगा घाट पर चलो और गंगा मैया से वैसा ही दूसरा कंकण माँग कर लाओ।

सेठ की बातें सुनकर रैदास हँसे और फिर बोले, देखो सेठ, कहीं भी जाने की आवश्यकता नहीं है। यदि मन शुद्ध है और भक्ति भाव सच्चा है तो मेरी इस कठौती में भी गंगा मैया प्रकट हो सकती हैं। वे गंगा मैया की स्तुति करने लगे। कुछ ही क्षणों में रैदास की कठौती में गंगा मैया प्रकट हो गई। उन्होंने एक और स्वर्ण कंकण रैदास को दिया और अदृश्य हो गई।

यह देखकर सेठ ने रैदास के चरण पकड़ लिए और कहा, रैदास मुझे क्षमा करना। मैं तो आपको केवल एक चर्मकार ही मानता था परंतु आप तो संत हैं। सच्चे भक्त हैं। आप मुझ पर कृपा कीजिए और मेरा मार्गदर्शन कीजिए।

रैदास की भक्ति से ही यह कहावत प्रचलित है मन चंगा तो कठौती में गंगा। इसका अर्थ है, परमात्मा सर्वव्यापी है। यदि मन शुद्ध है तो उसके दर्शन कहीं भी हो सकते हैं।

निम्न प्रश्नों का उत्तर लिखिए:

१. रैदास का जन्म कहाँ और कब हुआ था ?
२. उनका नाम रविदास क्यों रखा गया ?
३. पंडित रैदास से मूर्ति क्यों माँग रहा था ?
४. रैदास ने सेठ को सुपारी देते समय क्या शर्त रखी थी ?
५. 'मन चंगा तो कठौती में गंगा', कहावत का क्या अर्थ है ?



- भगवतशरण उपाध्याय

(आशय: लोकगीतों को आम जनता का संगीत माना जाता है। भारत में लोकगीतों का अपना ही महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने भारत के कई स्थानों में प्रचलित लोकगीतों का परिचय हमारे सामने रखा है।)

लोकगीत अपनी लोच, ताशगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं। लोकगीत सीधे जनता के संगीत हैं। घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं ये। इनके लिए साधना की ज़रूरत नहीं होती। त्योहारों और विशेष अवसरों पर ये गाए जाते हैं। सदा से ये गाए जाते रहे हैं और इनके रचने वाले भी अधिकतर गाँव के लोग ही हैं। स्त्रियों ने भी इनकी रचना में विशेष भाग लिया है। ये गीत बाजों की मदद के बिना ही या साधारण ढोलक, झाँझ, करताल, बाँसुरी आदि की मदद से गाए जाते हैं।

एक समय था जब शास्त्रीय संगीत के सामने इनको हेय समझा जाता था। अभी हाल तक इनकी बड़ी उपेक्षा की जाती थी। पर इधर साधारण जनता की ओर जो लोगों की नज़र फिरी है तो साहित्य और कला के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक-साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कمر बाँधी है और इस प्रकार के अनेक संग्रह अब तक प्रकाशित भी हो गए हैं।

लोकगीतों के कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार तो बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है।

मध्य प्रदेश, दकन, छोटा नागपुर में गोंड-खांड, ओराँव-मुंडा, भील-संथाल आदि फैले हुए हैं, जिनमें आज भी जीवन नियमों की जकड़ में बंध न सका और निर्द्वंद्व लहराता है। इनके गीत और नाच अधिकतर साथ-साथ और बड़े-बड़े दलों में गाए और नाचे जाते हैं। बीस-बीस, तीस-तीस आदमियों और औरतों के दल एक साथ या एक-दूसरे के जवाब में गाते हैं, दिशाएँ गूँज उठती हैं। पहाड़ियों के अपने-अपने गीत हैं। उनके अपने-अपने भिन्न रूप होते हुए भी अशास्त्रीय होने के कारण उनमें अपनी एक समान भूमि है। गढ़वाल, किन्नौर, काँगड़ा आदि के अपने-अपने गीत और उन्हें गाने की अपनी-अपनी विधियाँ हैं। उनका अलग नाम ही 'पहाड़ी' पड़ गया है।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातों में है। इनका संबंध देहात की जनता से है। बड़ी जान होती है इनमें। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्जापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के अन्य पूरबी और बिहार के पश्चिमी जिलों में गाए जाते हैं। बाउल और भतियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया आदि इसी प्रकार के हैं। हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल संबंधी गीत पंजाबी में और ढोला-मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाए जाते हैं।

इन देहाती गीतों के रचयिता कोरी कल्पना को इतना मान न देकर अपने गीतों के विषय रोजमर्रा के बहते जीवन से लेते हैं, जिससे वे सीधे मर्म को छू लेते हैं। उनके राग भी साधारणतः पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ आदि हैं। कहरवा, बिरहा, धोबिया आदि देहात में बहुत गाए जाते हैं और बड़ी भीड़ आकर्षित करते हैं।

इनकी भाषा के संबंध में कहा जा चुका है कि ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाए जाते हैं। इसी कारण ये बड़े आह्लादकर और आनंददायक होते हैं। राग तो इन गीतों के आकर्षक होते ही हैं, इनकी समझी जा सकने वाली भाषा भी इनकी सफलता का कारण है।

भोजपुरी में करीब तीस-चालीस बरसों से 'बिदेसिया' का प्रचार हुआ है। गाने वालों के अनेक समूह इन्हें गाते हुए देहात में फिरते हैं। उधर के जिलों में विशेषकर बिहार में बिदेसिया से बढ़कर दूसरे गाने लोकप्रिय नहीं हैं। इन गीतों में अधिकतर रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहती है, परदेशी प्रेमी की और इनसे करुणा और विरह का रस बरसता है।

जंगल की जातियों आदि के भी दल-गीत होते हैं जो अधिकतर बिरहा आदि में गाए जाते हैं। पुरुष एक ओर और स्त्रियाँ दूसरी ओर एक-दूसरे के जवाब के रूप में दल बाँधकर गाते हैं और दिशाएँ गुँजा देते हैं। पर इधर कुछ काल से इस प्रकार के दलीय गायन का “ह्रास हुआ है।

एक दूसरे प्रकार के बड़े लोकप्रिय गाने आल्हा के हैं। अधिकतर ये बुंदेलखंडी में गाए जाते हैं। आरंभ तो इसका चंदेल राजाओं के राजकवि जगनिक से माना जाता है जिसने आल्हा-ऊदल की वीरता का अपने महाकाव्य में बखान किया, पर निश्चय ही उसके छंद को लेकर जनबोली में उसके विषय को दूसरे देहाती कवियों ने भी समय-समय पर अपने गीतों में उतारा और ये गीत हमारे गाँवों में आज भी बहुत प्रेम से गाए जाते हैं। इन्हें गाने वाले गाँव-गाँव ढोलक लिए गाते फिरते हैं। इसी की

सीमा पर उन गीतों का भी स्थान है जिन्हें नट रस्सियों पर खेल करते हुए गाते हैं। अधिकतर ये गद्य-पद्यात्मक हैं और इनके अपने बोल हैं।

अनंत संख्या अपने देश में स्त्रियों के गीतों की है। हैं तो ये गीत भी लोकगीत ही, पर अधिकतर इन्हें औरतें ही गाती हैं। इन्हें सिरजती भी अधिकतर वही हैं। वैसे नाचने वाले या गाने वाले मर्दों की भी कमी नहीं है पर इन गीतों का संबंध विशेषतः स्त्रियों से है। इस दृष्टि से भारत इस दिशा में सभी देशों से भिन्न है क्योंकि संसार के अन्य देशों में स्त्रियों के अपने गीत मर्दों या जनगीतों से अलग और भिन्न नहीं हैं, मिले-जुले ही हैं।

त्योहारों पर नदियों में नहाते समय के, नहाने जाते हुए राह के, विवाह के, मटकोड़, ज्यौनार के, संबंधियों के लिए प्रेमयुक्त गाली के, जन्म आदि सभी अवसरों के अलग-अलग गीत हैं, जो स्त्रियाँ गाती हैं। इन अवसरों पर कुछ आज से ही नहीं बड़े प्राचीनकाल से वे गाती रही हैं। महाकवि कालिदास आदि ने भी अपने ग्रंथों में उनके गीतों का हवाला दिया है। सोहर, बानी, सेहरा आदि उनके अनंत गानों में से कुछ हैं। वैसे तो बारहमासे पुरुषों के साथ नारियाँ भी गाती हैं।

एक विशेष बात यह है कि नारियों के गाने साधारणतः अकेले नहीं गाए जाते, दल बाँधकर गाए जाते हैं। अनेक कंठ एक साथ फूटते हैं यद्यपि अधिकतर उनमें मेल नहीं होता, फिर भी त्योहारों और शुभ अवसरों पर वे बहुत ही भले लगते हैं। गाँवों और नगरों में गायिकाएँ भी होती हैं जो विवाह, जन्म आदि के अवसरों पर गाने के लिए बुला ली जाती हैं। सभी ऋतुओं में स्त्रियाँ उल्लसित होकर दल बाँधकर गाती हैं। पर होली, बरसात की कजरी आदि तो उनकी अपनी चीज़ है, जो सुनते

ही बनती है। पूरब की बोलियों में अधिकतर मैथिल-कोकिल विद्यापति के गीत गाए जाते हैं। पर सारे देश के कश्मीर से कन्याकुमारी-केरल तक और काठियावाड़-गुजरात-राजस्थान से उड़ीसा-आंध्र तक अपने-अपने विद्यापति हैं।

स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। अधिकतर उनके गाने के साथ नाच का भी पुट होता है। गुजरात का एक प्रकार का दलीय गायन 'गरबा' है जिसे विशेष विधि से घेरे में घूम-घूमकर औरतें गाती हैं। साथ ही लकड़ियाँ भी बजाती जाती हैं जो बाजे का काम करती हैं। इसमें नाच-गान साथ चलते हैं। वस्तुतः यह नाच ही है। सभी प्रांतों में यह लोकप्रिय हो चला है। इसी प्रकार होली के अवसर पर ब्रज में रसिया चलता है जिसे दल के दल लोग गाते हैं, स्त्रियाँ विशेष तौर पर।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनंत प्रकार हैं। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है वहाँ भला आनंद के स्रोतों की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के अनंत संख्यक गाने प्रतीक हैं।

याद रखिए :

- * लोकगीत जनता का संगीत।
- * अधिकतर गीतों के कोई रचयिता का नाम नहीं मिलता।
- * पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह बहता आ रहा है।
- * देश के हर प्रदेश में विभिन्न प्रकार के लोकगीतों का फैलाव है।

लेखक परिचय : भगवत शरण उपाध्याय जी का जन्म ई. १९२० को उत्तर प्रदेश राज्य के उजियारपुर जिले के बलिया में हुआ इन्होंने संस्कृत, हिंदी साहित्य, इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व का गहन अध्ययन किया था। इनकी भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है। इन्होंने विवेचनात्मक भावुकता पूर्ण, चित्रात्मक भाषा का प्रयोग तथा कहीं - कहीं रेखाचित्र शैली का प्रयोग किया है।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - विश्वसाहित्य की रुपरेखा, कालीदास का भारत, टंटाआम, लालचीन, गंगा - गोदावरी, बुद्ध वैभव - आदि।

इन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की शोध-पत्रिका और हिंदी विश्वकोश संपादक मंडल के सदस्य थे। विक्रम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रहे थे। १२ अगस्त १९८२ को इनका देहांत हो गया।

शब्दार्थ :

लोच - रचना में खास प्रकार की नमनीयता, अच्छा ढंग, कोमलता, ह्रास - नष्ट, सिरजना - सृष्टि करना, ज्योनार - दावत, स्रोत - मूल, मूलांश

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. लोकगीतों के रचनाकार कौन हैं ?
२. चैता, कजरी आदि लोकगीत कहाँ गाए जाते हैं ?
३. लोकगीत का मुख्य विषय क्या होता है ?
४. चंदेल राजाओं के राजकवि कौन थे ?
५. विद्यापति के गीत अधिकतर कहाँ गए जाते हैं ?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. आजकल लोकगीतों का संग्रह क्यों हो रहा है ?
२. पहाड़ी लोकगीत के बारे में लिखिए ?
३. लोकगीतों के भाषा और भाव के बारे में लिखिए ?
४. बिदेसिया लोकगीत कहाँ गाए जाते हैं? प्रमुखतः इनमें निहित विषय कौन-सा है?
५. लोकगीत गाने के संदर्भों के बारे में लिखिए ?

III. चार पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. देश के विविध प्रदेशों में गाए जानेवाले लोकगीतों का परिचय दीजिए ।
२. लोकगीतों को जीवित रखने में स्त्रियाँ महत्तर भूमिका निभा रही हैं। स्पष्ट कीजिए।
३. विद्यापति और जगनिक के लोकगीतों का क्या संबंध है ?
४. आधुनिक संदर्भ में लोकगीतों का क्या महत्व है ?

IV. जोड़कर लिखिए :

- | | | |
|------------------|---|------------------|
| १. बारहमास, सावन | - | भोजपुरी |
| २. बादल-भतियानी | - | राजस्थान |
| ३. ढोलामारु | - | मिर्जापुर, बनारस |
| ४. बिदेसिया | - | बुंदेलखण्ड |
| ५. आल्हा | - | बंगाल |

V. इन शब्दों के लिंग पहचानिए :

जनता, गाँव, ढोलक, बाँसुरी, विधि, जान, भाषा, ऋतु, वीरता, नदी, राह, दल, मास, हाल, देश

VI. अन्य वचन रूप लिखिए :

गाँव, त्योहार, बाँसुरी, अनेक, औरतें, राजा

VII. विलोम शब्द लिखिए :

आकर्षण, प्रमुख, साधारण, प्राचीन, मिलना, उपेक्षा

VII. अन्य लिंग रूप लिखिए :

औरत, कवि, लेखक, अकेला, युवक, भिखारी

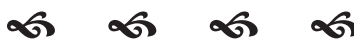
IX. विच्छेद कर संधि का नाम लिखिए :

दिग्गज, सदाचार, पर्वतावली, जगन्नाथ,

निष्कपट, पुरोहित, नाविक, भवन

योग्यता विस्तार :

- * कुछ लोकगीतों को संग्रहीत कर कक्षा में सुनाइए।
- * लोकगीतों के समान लोक कथा भी प्रचलित हैं। इनके बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।



समा बंध गया



- नगेंद्र भट्टाचार्य

(आशय : यात्रा से भूगोल का प्रत्यक्ष ज्ञान मिलता है। लोगों के रहन-सहन, प्राकृतिक दृश्यों की सुंदरता आदि का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होता है। यह यात्रा-वर्णन पढ़ें...)

वह यात्रा लगातार 24-25 घंटे की थी। ट्रेन के साथ खाने की बोगी नहीं थी। मेरे मित्र बोरिस टोकरी भरकर भोजन लाए थे। उनका ध्यान चारों ओर रहता था। कौन माँसाहारी है? कौन शाकाहारी? किसको फल चाहिए और किसे पनीर पसंद है। ये सब बातें उन्हें मालूम थीं। ट्रेन का कंडक्टर भी बीच-बीच में आवश्यकतानुसार नींबू, गरम चाय या कॉफी दे जाया करता था।

मास्को से ट्रेन चलने के बाद ही से मैं देख रहा था कि दोनों ओर ज़मीन समतल है। बचपन में रेलगाड़ी द्वारा पूर्वी बंगाल में जो दृश्य देखे थे, वे आँखों के सामने उभर उठे। तब वे दृश्य हमें कितनी ही विचित्र-विचित्र भावनाओं से भर देते थे। कितने ही परिचित-अपरिचित पक्षी बंगाल के इन वनों में देखे जा सकते थे। फिर तो वन धीरे-धीरे नष्ट होने लगे। बड़ा होकर जब भी उस रास्ते से गुज़रता हूँ, बार-बार मन में यही बात आती है कि इस प्रकार वन-भूमि को नष्ट करके हमने क्या पाया? पिछले बीस साल में संथाल परगना, गया, हजारीबाग के अंचल में जंगलों की बहुत हानि हुई। वसुंधरा भी इसका प्रतिशोध ले रही है - शुष्क, निष्ठुर होकर। वन-संपत्ति को हमने थोड़े से धन

के लोभ में, हर साल काट-काट कर समाप्त कर दिया है। अब, जब विपत्ति ने दरवाज़े पर दस्तक दी है, तब हम थोड़े-बहुत पेड़ लगा रहे हैं। इस तरह क्या समस्या का समाधान हो सकेगा? रूस, पोलैंड, पश्चिमी जर्मनी में ट्रेन से यात्रा करते समय इतने सुनियोजित वनों के क्षेत्र देखकर ऐसी बातें मन में उठ रही थीं।

ट्रेन चलती गई। चाल इसकी धीमी है। बीच-बीच में स्टेशन आते हैं। ट्रेन रुकती है, लोगों का चढ़ना-उतरना देखता हूँ। स्टेशन पर कॉफी, बिस्कुट, सैंडविच और सिगरेट की दुकानें हैं। न तो फेरीवाले हैं, न है “चाय गरम, पान बीड़ी सिगरेट” की सुरीली आवाज़। यात्री अपना थोड़ा-सा सामान खुद ही उठाते हैं। इसलिए कुलियों का जमघट भी नहीं है।

यहाँ गाड़ी में दो प्रकार की व्यवस्था होती है। एक तो स्लीपिंगकार जिसमें गद्देदार बेंचे होती हैं। रात में कंबल और एक चादर दी जाती है। पूरी कार में कंडक्टर होता है जो बीच-बीच में चाय, कॉफी या नींबू पानी बनाकर देता है। साधारण श्रेणी में हमारे देश की तरह ही, गद्दे रहित काठ की बेंचे होती हैं।

रेलवे लाइन के दोनों ओर मैदान, वन, ग्राम फैले थे। गाँवों में लकड़ी के छोटे-छोटे घर, चारों ओर फल-सब्जियों के बाग। घरों के पास गाय, घोड़े, मुर्गी आदि घूम रहे थे। सिर पर सफ़ेद कपड़ा बांधे और गाउन पहने स्वस्थ रूसी युवतियाँ घर के कामकाज करती दिखाई दे रही थीं। ट्रेन को देखकर वे भी हमारे देश के गाँवों की लड़कियों की तहर रुक कर खड़ी हो जातीं।

बहुत विस्तृत देश है रूस। इस देश में घूमना-फिरना धरती के सान्निध्य में रहकर ही किया जाए, तभी उसके ग्राम्य जीवन, कृषि, वन-संपदा और जन-साधारण को देखा जा सकता है। किंतु अभी तो ट्रेन की खिड़की से ही देखकर संतोष करना पड़ा।

पुराने दिनों के रूसी साहित्य में हमने इस देश का विवरण पढ़ा है। इससे पता लगता है कि वहाँ पर भी जनता की दुर्दशा हमारे देश से कम न थी। इस सदी में रूस को दो महायुद्धों का सामना करना पड़ा। फिर भी उसने पिछली दुर्दशा और महायुद्धों से हुए विनाश को धो-पोंछकर बिल्कुल साफ़ कर दिया है।

नदी के किनारे पहाड़ को छूती हुई रेलवे लाइन दूर तक जाती है। नदी के ऊपर एक बहुत बड़ा पुल है। उसपर रेल और मोटर गुज़रने की व्यवस्था है। ट्रेन से नदी के बीच नहाते लोगों की भीड़ देखी जा सकती है। गर्मी की इस दोपहरी में हज़ारों लोग जल में तैर रहे हैं। कुछ लोग छोटी-छोटी नावों में मछली पकड़ने का काँटा लिए बैठे हैं। मोटरबोटें तेज़ी से दौड़ रही हैं। नदी के किनारे से कीव स्टेशन लगभग डेढ़ मील दूर है। शहर के मकान आदि पुल से ही नज़र आने लगते हैं। स्टेशन पहुँचने पर देखा कि बोरिस के बहुत से रिश्तेदार हमारा स्वागत करने के लिए उपस्थित हैं।

हम घर पहुँचे। रात की बैठक जमी। बोरिस की भानजी ने गीत सुनाया। अत्यंत मधुर कंठ, मोहक सौंदर्य और देश के लोक-संगीत की मिठास। यूरोपीयन संगीत से हमारे संगीत का जो भेद है, उस समय वह कतई नहीं मालूम हो रहा था। समानता ही अधिक प्रतीत हो रही थी। अनुरोध करने पर उसने एक गीत और सुनाया। धीरे-धीरे हम लोग भी ताली देने लगे, समा बंध गया।

याद रखिए :

- * बहुमूल्य वन संपत्ति की रक्षा करने से मनुष्य और जीव संकुल के लिए अनेक लाभ होते हैं।
- * रूस बहुत विस्तृत देश है।
- * रूस के रेलवे स्टेशन पर फेरीवाले नहीं होते हैं।
- * महायुद्धों का सामना करने पर भी रूस में असाधारण प्रगति देखने को मिलती है।
- * संगीत सब लोगों को अपनी ओर आकर्षण करता है।

लेखक परिचय : नगेंद्र भट्टाचार्य का जन्म अविभक्त बंगाल के मैमन सिंह जिले में १९१० को हुआ। वे मूलतः चित्रकार हैं। वे दिल्ली के 'शारदा उकील स्कूल ऑफ आर्ट्स' में अध्यापक रहे। बाद में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय में और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में कार्यरत रहे। आपने यूरोप के कई देशों का भ्रमण किया था। इस यात्रा का वृत्तांत पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ। 'समा बंध गया' इस यात्रा-वृत्तांत का अंश है।

शब्दार्थ :

गद्देदार-रूई से बना हुआ मोटा बिस्तर, काठ-लकड़ी, काँटा-मछली पकड़ने की झुकी हुई नोकदार कंटिया, कतई-कभी भी; कभी, समाबंधना-संगीत आदि का इतना उत्तमता से होना कि लोग स्तब्ध हो जायें, वसुंधरा-भूमि, प्रतिशोध-बदला

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. लेखक के मित्र का नाम क्या है ?
२. लेखक के मन में बार-बार कौन-सी बात आती है ?
३. रूसी युवतियाँ कैसे दिखाई दे रही थीं ?
४. लेखक का स्वागत करने के लिए स्टेशन पर कौन आये थे ?
५. घर में गीत कौन सुनाया ?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. ट्रेन में बोरिस का व्यवहार कैसा था ?
२. स्टेशन में आवश्यक वस्तुओं के खरीदने के लिए कैसी व्यवस्था थी ?
३. पुराने रूसी साहित्य में लेखक ने क्या पढ़ा था ?
४. महायुद्धों का सामना करने पर भी रूस की प्रगति कैसी है ?
५. कीव शहर के बारे में लेखक ने क्या कहा है ?

III. चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. लेखक के अनुसार वसुंधरा हमसे प्रतिशोध ले रही है। क्यों और कैसे ?
२. लेखक ने ग्राम्य जीवन का वर्णन कैसे किया है ?
३. रेल और कंडक्टर के बारे में लेखक ने क्या कहा है ?
४. नदी के पुल से कौन-से दृश्य नज़र आते हैं ?
५. समा बँध जाने के अवसर का वर्णन कीजिए।

IV. जोड़कर लिखिए :

- | | |
|-------------------------------|-------------------------|
| १. कौन शाकाहारी है? | - एक बहुत बड़ा पुल है। |
| २. वसुंधरा भी इसका | - कौन माँसाहारी है? |
| ३. नदी के ऊपर | - गीत सुनाया। |
| ४. वहाँ पर भी जनता की दुर्दशा | - प्रतिशोध ले रही है। |
| ५. बोरिस की भानजी ने | - हमारे देश से कम न थी। |

V. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

देखना, वन, विपत्ति, धीरे-धीरे, रास्ता

VI. विलोम शब्द लिखिए :

थोड़ा, पसंद, गरम, पिछला

VII. निम्नलिखित वाक्यों के आगे दिये हुए कोष्ठक से उचित शब्द लेकर रिक्त स्थान भरिए:

१. यह _____ कमरा है। (उसकी/उसका)
२. _____ मकान में तीन कमरे हैं। (मेरे/मेरी)
३. _____ बाग में आम के पेड़ हैं। (हमारे/हमारी)
४. रोहन _____ पिता शांत स्वाभाव के हैं (का/के)
५. वह कल _____ घर गया था। (तुम्हारा/तुम्हारे)

VIII. उदाहरण के अनुसार 'को' का प्रयोग कर निम्नलिखित वाक्यों को फिर से लिखिए :

उदा: उषा हिंदी पढ़ती है। - उषा को हिंदी पढ़नी चाहिए।

१. रमेश तालाब में तैरता है। - _____

२. रीटा गाना गाती है। - _____

३. हम समय पर स्कूल जाते हैं। - _____

४. वह बड़ों का आदर करता है। - _____

IX. रेखांकित शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है?

१. भारत में कई ऐतिहासिक स्थान हैं।

२. हम भारत देश के निवासी हैं।

३. इस विद्यालय में बहुत छात्र हैं।

४. मजदूर लोग परिश्रम से पैसे कमाते हैं।

५. उतना खाओ जितना आवश्यक हो।

X. वाच्य बदलिए :

१. शिकारी शिकार करता है।

२. मैंने पत्र लिखा

३. बावर्ची ने आज खीर पकाई।

४. हिरन दौड़ता है।

योग्यता विस्तार :

* काका कालेलकर, राहुल सांकृत्यायन और अज्ञेय जी के यात्रा-वर्णन पढ़िए ।

* आपके जीवन में किए गए पर्यटन का वर्णन कीजिए ।





सवेरे उठा तो धूप खिली थी ।

- सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(आशय : कवि सवेरे उठा तो प्रकृति के सुहावने दृश्य देख वह आनंद विभोर हो गया। हल्की - सी धूप, चिड़ियों की सुरीली आवाज हरी-हरी घास, शंखपुष्पी से बिखरती हुई श्वेत चमक, बहता हुआ शीतल पवन, आनंद से थिरकती लहरें, ऊपर फैला हुआ असीम आकाश - सब उसे मोह लेते हैं, सब उसे बहुत भाते हैं। वह सोचता यदि मानव के जीवन में भी ये सब हो तो जीवन कितना मधुर हो। इसलिए वह इन सबसे उधार मांगता है - धूप से गरमी (स्नेह), चिड़िया से मिठास, हरियाली से ताजगी, शंखपुष्पी से उजास, हवा से खुलापन और लहरों से उल्लास। इन सब ने उसकी मांग को पूरा किया। उसने ले लिया। लेकिन जब उसकी बारी कुछ देने की आई तो वह कतराता है। मानव लेना जानता है, देना उसकी प्रकृति नहीं।)

सवेरे उठा तो धूप खिलकर छा गयी थी
और एक चिड़िया अभी-अभी गा गयी थी।
मैंने धूप से कहा : मुझे थोड़ी गरमाई दोगी उधार ?
चिड़िया से कहा : थोड़ी मिठास उधार दोगी ?
मैंने घास की पत्ती से पूछा : तनिक हरियाली दोगी -
तिनके की नोक - भर ?
शंखपुष्पी से पूछा : उजास दोगी - किरण की ओक-भर ?
मैंने हवा से मांगा : थोड़ा खुलापन - बस एक प्रश्वास ;
लहर से : एक रोम की सिहरन - भर उल्लास।
मैंने आकाश से मांगी

आँख की झपकी-भर असीमता - उधार ।
 सबसे उधार माँगा, सबने दिया ।
 यों मैं जिया और जीता हूँ
 क्योंकि यही सब तो है जीवन -
 गरमाई, मिठास, हरियाली, उजाला,
 गन्धवाही मुक्त खुलापन, लोच, उल्लास, लहरिल प्रवाह,
 और बोध भव्य निर्व्यास निस्सीम का:
 ये सब उधार पाये हुए द्रव्य ।
 रात के अकेले अन्धकार में
 सपने से जागा जिसमें
 एक अनदेखे अरूप ने पुकार कर मुझसे पूछा: क्योंजी,
 तुम्हारे इस जीवन के
 इतने तुम धनी हो,
 तो मुझे थोड़ा प्यार दोगे उधार, जिसे मैं
 सौगुने सूद के साथ लौटाऊँगा
 और वह भी सौ-सौ बार गिन के
 जब-जब मैं आऊँगा ?
 मैंने कहा: प्यार ? उधार ?
 स्वर अचकचाया था, क्योंकि मेरे
 अनुभव से परे था ऐसा व्यवहार ।
 उस अनदेखे अरूप ने कहा : हाँ,
 क्योंकि ये ही सब चीज़ें तो प्यार हैं -
 यह अकेलापन, यह अकुलाहट, यह असमंजस, अचकचाहट,
 आर्त अनुभव,

यह खोज, यह द्वैत, यह असहाय विरह व्यथा,
यह अंधकार में जगकर सहसा पहचानना कि
जो मेरा है वही ममेतर है -
यह सब तुम्हारे पास है
तो थोड़ा मुझे दे दे - उधार - इस एक बार -
मुझे जो चरम आवश्यकता है।
उसने यह कहा,
पर रात के घुप अंधेरे में
मैं सहमा हुआ चुप रहा ; अभी तक मौन हूँ :
अनदेखे अरूप को
उधार देते मैं डरता हूँ :
क्या जाने यह याचक कौन है ?

याद रखिए :

- * सबेरे चिड़िया के चहकने में मिठास होती है।
- * घास की हरियाली मन को भाती है।
- * हवा में खुलापन होता है।
- * आकाश में असीमता होती है।
- * इस कविता में एक मनुष्य धूप, चिड़िया, घास, शंखपुष्पी, हवा, लहर, आकाश-इन सबसे उनके अपूर्व गुणों को उधार लेना चाहता है।
- * सपने में उसी आदमी से एक अनदेखे अरूप ने प्यार माँगा।
- * अनदेखे अरूप को बिना जाने मनुष्य कुछ देना नहीं चाहता।

कवि परिचय : सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म ७ मार्च १९११ को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के प्रसिद्ध बौद्ध स्थल कसया के पास हुआ था। मैट्रिक तक की शिक्षा घर पर हुई। मद्रास से इंटरमीडिएट और बी.एस सी. करके क्रांतिकारी संगठन में शामिल हो गए। बम बनाने का काम भी किया, पकड़े भी गए। बाद में आज़ाद हिन्द फौज में शामिल हुए। 'सैनिक' 'विशाल भारत' 'प्रतीक' 'वाक' 'दिनमान' 'नवभारत टाइम्स' पत्रिकाओं के संपादक रहे। साहित्य अकादमी और भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कारों से सम्मानित थे। उनकी मृत्यु १९८७ ई. में हुई।

रचनाएँ : सदानीरा भाग १, २ कविताएँ; छोड़ा हुआ रास्ता और लौटती पगड़ियाँ (संपूर्ण) कहानियाँ; 'शेखर एक जीवनी भाग १, २; 'नदी के द्वीप; 'अपने अपने अजनबी' उपन्यास; 'अरे यायावर रहेगा याद', संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, आलोचना-ग्रंथ, तारा सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक आदि संपादित काव्य संकलन।

शब्दार्थ :

तनिक - ज़रा सा, थोड़ा, ओक-भर - थोड़ा सा आश्रय, अंजुली भर, चिड़िया = पक्षी, नोक - पतला अग्र भाग, प्रश्वास - सांस, शंखपुष्पी - एक प्रकार का फूल, सिहरन - कंपन, झपकी - अल्पनिद्रा, ऊँघनी, गंधवाही - सुगंध ले जानेवाला, वायु असीम - अनंत, अपार, लोच - कोमलता, लचक, निर्व्यास - अंतहीन, जिसका कोई विस्तार न हो, बोध - ज्ञान, संतोष, निस्सीम - अपार, जिसकी सीमा न हो अरूप - रूप रहित, सूद - ब्याज, लाभ, अकुलाहट - बेचैनी, घबराहट, असमंजस - दुविधा, आर्त - पीड़ित, दुःखित, ममेतर - मुझसे भिन्न, घुप - गहरा, गाढ़, सहमा - डरा, याचक - माँगनेवाला

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

१. कवि ने सुबह उठते ही क्या देखा ?
२. कवि ने चिड़िया से क्या माँगा ?
३. कवि ने किससे हरियाली माँगी ?
४. कवि ने शंखपुष्पी से कितना प्रकाश माँगा ?
५. आकाश की खूबी क्या है ?
६. हवा ने कवि को क्या दिया ?
७. अनदेखे अरूप ने कवि से क्या उधार माँगा ?
८. अरूप के अनुसार 'जो मेरा है' वही क्या है ?
९. रात के घुप अंधेरे में कवि का क्या हाल था ?
१०. कवि उधार देने से क्यों डरता है ?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. किस के सपने में अनदेखे अरूप आया था ? और उसने कवि से प्यार कैसे माँगा ?
२. अनदेखे अरूप ने प्यार को कैसे वापस लौटाने की बात कही ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में लिखिए :

१. सवेरे उठते ही कवि ने किन-किन से, क्या-क्या उधार माँगा ?
२. कवि किन द्रव्यों के आधार से जीता था ?

३. सपने में अनदेखे अरूप ने कवि से क्या माँगा ?
४. अनदेखे अरूप ने प्यार का अर्थ कैसे बताया ?

IV. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

१. मैंने धूप से कहा : मुझे थोड़ी गरमाई दोगी उधार ?
चिड़िया से कहा : थोड़ी मिठास उधार दोगी ?
२. सबसे उधार माँगा, सबने दिया ।
यों मैं जिया और जीता हूँ
क्योंकि यही सब तो है जीवन -
३. इतने तुम धनी हो,
तो मुझे थोड़ा प्यार दोगे उधार, जिसे मैं
सौगुने सूद के साथ लौटाऊँगा ।
४. अनदेखे अरूप को
उधार देते मैं डरता हूँ ;
क्या जाने यह याचक कौन है ?
५. “मानव की परोपकार-भावना” पर एक लेख लिखिए ।

V. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

आँख, आकाश, घास, हवा, चिड़िया, प्यार

VII. रिक्त स्थान को उचित शब्द से भरिए:

१. मैंने घास की पत्ती से पूछा: तनिक _____ दोगे
२. तो मुझे थोड़ा _____ दोगे उधार
३. सौगुने _____ के साथ लौटाऊँगा
४. जो मेरा है वही _____ है
५. क्या जाने यह _____ कौन है?

VIII. भाव स्पष्ट कीजिए:

सबसे उधार माँगा, सबने दिया ।

यों मैं जिया और जीता हूँ

क्योंकि यही सब तो है जीवन -

गरमाई मिठास, हरियाली, उजाला

गंधवाही, मुक्त खुलापन, लोच, उल्लास लहरिल प्रवाह और बोध
भव्य निर्व्यास निस्सीम का: हे सब उधार पाये हुए द्रव्य ।

योग्यता विस्तार :

- * सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जी की कुछ और कविताएँ पढ़िए ।



पूरक वाचन

जो देखकर भी नहीं देखते

- हेलेन केलर

कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ, यह परखने के लिए कि वह क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापिस लौटीं। मैंने उनसे पूछा, “आपने क्या-क्या देखा?”



हेलेन केलर

“कुछ खास तो नहीं,” उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती हैं, वे बहुत कम देखते हैं।

क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटा भर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज़ न देखे? मुझे जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता-सैकड़ों रोचक चीज़ें मिलती हैं, जिन्हें मैं छूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान मैं टहनियों में नयी कलियाँ खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने में अपार आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनीब होती हूँ, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूँजने लगते हैं। अपनी अँगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियाँ या घास का मैदान किसी भी महँगे कालीन से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है।

कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीज़ों को देखने के लिए मचल उठता है। अगर मुझे इन चीज़ों को सिर्फ़ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा। परंतु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।

यह कितने दुख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज समझते हैं, जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।

निम्न प्रश्नों का उत्तर लिखिए:

१. 'जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं' हेलेन केलर को ऐसा क्यों लगता था?
२. 'प्रकृति का जादू' किसे कहा गया है?
३. 'कुछ खास तो नहीं' हेलेन की मित्र ने यह जवाब किस मौके पर दिया और यह सुनकर हेलेन को आश्चर्य क्यों हुआ?
४. हेलेन केलर प्रकृति की किन चीज़ों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थीं? पाठ पढ़कर इसका उत्तर लिखो।
५. 'जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।' तुम्हारी नज़र में इसका क्या अर्थ हो सकता है?





सच्चा धर्म

- सेठ गोविन्ददास

(आशय : इस एकांकी में सेठ गोविन्ददास जी ने धर्म की समस्या को उठाया है। सामान्य रूप से हम लोग धर्म का जो अर्थ समझते हैं, वह सेठ जी की दृष्टि से सही नहीं है। धर्म का खान-पान या छुआछूत से विशेष संबंध नहीं है। सेठजी ने दिखाया है कि सच्चा धर्म वही है जिससे समाज के अधिक से अधिक व्यक्तियों का भला हो। धर्म किन्हीं निश्चित नियमों में बंधकर नहीं रह सकता। समय के साथ साथ धर्म का स्वरूप भी बदलता जाता है। कभी-कभी असत्य से भी धर्म की रक्षा होती है। मनुष्यत्व सभी धर्मों से बड़ा है। लेखक की दृष्टि में सच्चा धर्म वही है जो समाज में मनुष्यत्व की स्थापना करता हो)

पात्र

पुरुषोत्तम	:	दिल्ली निवासी एक महाराष्ट्री ब्राह्मण
अहिल्या	:	पुरुषोत्तम की पत्नी
संभाजी	:	शिवाजी का पुत्र
दिलावरखाँ	:	औरंगजेब की खुफिया जमात का एक सरदार
रहमानबेग	:	दिलावरखाँ का मातहत

पहला दृश्य

स्थान	:	दिल्ली में पुरुषोत्तम के मकान का एक कमरा
समय	:	मध्याह्न के निकट

(कमरा, एक छोटे-से मकान के एक छोटे - से कमरे सदृश दिखायी देता है। कमरे में पुरुषोत्तम बेचैनी से इधर-उधर टहल रहा है। पुरुषोत्तम

की अवस्था लगभग साठ वर्ष की है। वह गेहुँए रंग और साधारण शरीर का मनुष्य है। सिर के बाल मराठी ढंग के हैं, अर्थात् पीछे चौड़ी शिखा है, उसके चारों ओर छोटे-छोटे बाल और उसके चारों तरफ़ के बाल मूँडे हुए।

मुख पर बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। सारे बाल तीन-चौथाई से अधिक सफ़ेद हैं। वह लाल रंग का रेशमी उपरना ओढ़े हुए है। उसी रंग का रेशमी झोला पहने है। उसके सिर पर श्वेत चन्दन का त्रिपुण्ड लगा हुआ है और वक्षस्थल पर मोटा यज्ञोपवीत दिखायी देता है। अहिल्या का प्रवेश। अहिल्या करीब ५५ वर्ष की गेहुँए रंग और स्थूल शरीर की स्त्री है। बाल बहुत-से सफ़ेद हो गये हैं। वह मराठी ढंग की लाल चारखाने की साड़ी और वैसी ही चोली पहने हुए है। कुछ सोने के आभूषण भी पहने हुए है।)

अहिल्या - अभी भी,..... अभी भी वह हाल है, कोई निर्णय नहीं हो सका?

पुरुषोत्तम - (खड़े होकर) अहिल्या, प्रश्न कोई साधारण प्रश्न है?

अहिल्या - (बैठकर) कम से कम तुम सदृश सत्यवादी व्यक्ति के लिए तो ऐसे प्रश्नों से असाधारणता नहीं होनी चाहिए। जब मनुष्य सत्य का आश्रय छोड़ मिथ्या का आसरा लेता है, तभी तरह-तरह के प्रश्न उठ खड़े होते हैं।

पुरुषोत्तम - (बैठकर आश्चर्य से) सत्य का आश्रय छोड़कर मिथ्या का आसरा! मैं सत्य का आश्रय छोड़कर मिथ्या का आसरा ले रहा हूँ ?

अहिल्या - और क्या कर रहे हो ? संभाजी को शिवाजी तुम्हारे

पास रख गये हैं ; क्या यह सच नहीं है ? जो लड़का तुम्हारे पास रहता है वह तुम्हारा भानजा है, यह कहना सच बोलना है ?

पुरुषोत्तम - संभाजी को संभाजी न कहकर अपना भानजा कहना, शिवाजी मेरे पास संभाजी को नहीं रख गये हैं, यह कहना साधारण सच बोलने से कहीं बड़ा सत्य है।

अहिल्या - तुम्हारी सत्य-प्रियता अधिकांश दिल्ली में प्रसिद्ध है इसी के कारण यवन तक तुम्हारा आदर करते हैं।

पुरुषोत्तम - अहिल्या, हमारे शास्त्रों में सत्य और असत्य की व्याख्या बड़ी बारीकी से की गयी है। अनेक बार सत्य के स्थान पर मिथ्या-भाषण सत्य से भी बड़ी वस्तु होता है। जीवन में धर्म से बड़ी कोई चीज नहीं, धर्म की रक्षा यदि असत्य से होती है तो असत्य सत्य से बड़ा हो जाता है।

अहिल्या - धर्म की रक्षा ! अब तो तुमने और बड़ी बात कह दी ! संभाजी को अपना भानजा बनाने से तुम धर्म की रक्षा कर सकोगे ? दिलावरखाँ कह गया है कि वह उसे तुम्हारा भानजा तब मानेगा जब तुम उसके साथ बैठकर एक थाली में भोजन करोगे ! ब्राह्मण होकर अब्राह्मण के साथ भोजन करने से धर्म-रक्षा हो सकेगी ?

पुरुषोत्तम - (उठकर फिर टहलते हुए) अहिल्या यही..... यही प्रश्न मुझे व्यथित किये हुए है। जीवन भर मैंने जिस प्रकार धर्म का पालन किया है, उसे तुमसे अधिक और कोई नहीं जानता..... नहीं, नहीं, भगवान तुम से भी अधिक जानते हैं। (फिर बैठकर) मैंने सारे ब्राह्मण-कर्म नियमपूर्वक किये हैं। शौच, ब्राह्मण को छोड़कर किसी के हाथ का छुआ जल तक ग्रहण नहीं किया, वही मैं चौथेपन में अब्राह्मण के साथ बैठकर, एक

ही थाली में कैसे खाऊंगा, यह प्रश्न मुझे व्यथित अत्यधिक व्यथित किये हुए है। (फिर टहलते हुए) भगवान इस चौथेपन में क्या मेरी परीक्षा लेना चाहते हो? एक अब्राह्मण के साथ भोजन करा मुझे भ्रष्ट करना चाहते हो?

अहिल्या - यदि तुमने अब्राह्मण के साथ भोजन किया तो तुम्हीं तुम्हीं भ्रष्ट न होगे, सारा कुटुम्ब ही भ्रष्ट हो जायेगा। दो-दो कन्याएँ विवाह योग्य हो गयी हैं, किसी ब्राह्मण कुटुम्ब में उनका विवाह न हो सकेगा। पुत्र का विवाह हो चुका है तो क्या हुआ? उसकी सन्तान तक भ्रष्ट हो जायेगी, उसका न यज्ञोपवीत होगा और न ब्राह्मण में विवाह-संस्कार।

पुरुषोत्तम - (अहिल्या के निकट बैठकर उसकी ओर देखते हुए) तब.... क्या करूँ ?

अहिल्या - मैंने तो कहा, जन्म भर जिसके आश्रय में रहे हो, उस सत्य को न छोड़ो। औरंगजेब के सदृश बादशाह के राज्य में, उसकी राजधानी में रहते हुए हिन्दू और ब्राह्मण होते हुए भी, तुम यह सफल जीवन उसी सत्य के आश्रय के कारण बिता सके हो, धर्म की टेढ़ी-मेढ़ी व्याख्याओं में पड़कर अपना जीवन भर का सीधा मार्ग छोड़ अपने और अपने कुटुम्ब को नष्ट मत करो।

पुरुषोत्तम - तो मैं यह कह दूँ कि यह लड़का शिवाजी का पुत्र संभाजी हैं, मेरा भानजा नहीं। मिठाई की टोकरी में छिपकर दिल्ली से भागते समय शिवाजी उसे मेरे पास छोड़ गये हैं।

अहिल्या - परिणाम जो कुछ हो ! तुम सदा कहते नहीं रहे हो कि सत्य बोलने के सम्मुख परिणाम की ओर मनुष्य को दृष्टि ही नहीं डालनी चाहिए।

(पुरुषोत्तम सिर नीचा कर विचारमग्न हो जाता है। कुछ देर निस्तब्धता।)

पुरुषोत्तम - (एकाएक सिर उठाकर) नहीं, नहीं.... नहीं, नहीं..... यह कभी नहीं हो सकता, यह कभी नहीं हो सकता। यह... यह विश्वासघात होगा..... ऐसा ऐसा पातक, जिससे बड़ा पातक सम्भव ही नहीं। यह... यह शरणागत का बलिदान होगा, ऐसा.... ऐसा दुष्कर्म जिससे बड़ा दुष्कर्म हो ही नहीं सकता।

अहिल्या - पर दूसरी ओर तुम सत्य को तिलांजलि दे रहे हो.... अब्राह्मण के साथ भोजन कर धर्म-भ्रष्ट होने का प्रश्न तुम्हारे सम्मुख है और स्वयं के भ्रष्ट होने का ही नहीं, पर सारे कुटुम्ब के नष्ट हो जाने का....।

पुरुषोत्तम - (उठकर टहलते हुए) ओह ! ओह...ओह।

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान - दिल्ली की एक गली

समय - मध्याह्न के निकट

(तंग गली के कुछ मकान दिखायी पड़ते हैं। दिलावरखाँ और रहमानबेग खड़े हैं। दोनों अर्धेड अवस्था और गेहुँए रंग के ऊँचे पूरे व्यक्ति हैं। दिलावरखाँ की दाढ़ी भी है। दोनों उस समय की सैनिक वरदी पहने हुए हैं !)

दिलावरखाँ - (विचारते हुए) पंडित पुरुषोत्तमराव झूठ बोलेंगे, ऐसा... ऐसा यकीन तो नहीं होता।

रहमानबेग - जनाब, तमाम देहली में ऐसा कौन होगा, जो उन्हें जानता हो और यह मानता हो कि वे कभी भी झूठ बोल सकते हैं।

दिलावरखाँ - (उसी प्रकार विचारते हुए) लेकिन रहमानबेग यह लड़का दक्खनी बिरेहमन दिखता नहीं।

रहमानबेग - सिर्फ सूरत से यह कह सकना कि कौन बिरेहमन है और कौन नहीं, यह तो बड़ी मुश्किल बात है।

(कुछ देर निस्तब्धता। दिलावरखाँ गम्भीरता से सोचता रहता है। रहमानबेग उसकी तरफ देखता है।)

रहमानबेग - (कुछ देर बाद) फिर आपने तो पण्डित की बात पर ही यकीन करके मामले को नहीं छोड़ दिया, आपने तो उसे बहुत बड़ा सबूत देने के लिए कहा है। पुरुषोत्तमराव की बात ही काफी है, फिर अगर वह उस लड़के के साथ बैठकर खाना खा लेता है, तब तो शक की गुंजाइश ही नहीं रह जाती।

दिलावरखाँ - (सिर उठाकर) हाँ, कोई बिरेहमन किसी नीच कौम के साथ बैठकर थोड़े ही खा सकता है ?

रहमानबेग - और दक्खनी बिरेहमन मराठा के साथ, चाहे जान निकल जाय तो भी न खायेगा।

दिलावरखाँ - पुरुषोत्तम के मानिन्द बिरेहमन तो कभी नहीं।

रहमानबेग - कभी नहीं, कभी नहीं।

दिलावरखाँ - (ऊपर की तरफ देखकर) तो दोपहर तो हो ही रहा है। पूजा-पाठ के बाद उसने दोपहर को ही खाने के वक्त बुलाया था।

रहमानबेग - हाँ, वक्त हो रहा है, चलिए, चलिए।

(दोनों का प्रस्थान)

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान - पुरुषोत्तम के मकान का एक कमरा

समय - मध्याह्न

(पुरुषोत्तम और अहिल्या बैठे हैं। अहिल्या का मुख प्रसन्नता से खिल-सा गया है, पुरुषोत्तम के मुख पर वैसी ही उद्विग्नता दृष्टिगोचर होती है।)

अहिल्या - (ऊपर की ओर देखकर) धन्यवाद.... अगणित बार धन्यवाद है भगवान को कि अन्त में सत्य की उसने विजय कर दी। (पुरुषोत्तम की ओर देखकर) दिन भर का भूला-भटका यदि रात को घर लौट आये तो वह भूला नहीं कहलाता। उद्वेग के कारण तुमने एक बार मिथ्या अवश्य बोल दिया, पर देर... बहुत देर नहीं हुई, अभी भी समय है। दिलावरखाँ के आने के पहले तक समय है। अब उससे सारी बातें सच-सच कह देने पर मिथ्या भाषण के पाप से तुम मुक्त हो जाओगे। जन्म भर जिस सत्य का आश्रय रखा है, उसी की शरण में रहने से कोई आपत्ति भी नहीं आयेगी।

(पुरुषोत्तम कोई उत्तर नहीं देता। अहिल्या उसकी ओर देखती रहती है। कुछ देर निःस्तब्धता।)

अहिल्या - (कुछ देर बाद, पुरुषोत्तम की ओर देखते हुए) देखा...

देखा नहीं, एक... केवल एक बार सत्य का आसरा छोड़ते ही कैसी... कैसी महान् विपत्ति आयी। एक मिथ्या को सत्य सिद्ध करने के प्रयत्न में कितनी मिथ्या बातें कहनी पड़ती हैं। तुम सदृश सत्यवादी से अपने कथन की पुष्टि के लिए प्रमाण माँगा गया, ऐसा वैसा प्रमाण नहीं, भयंकर प्रमाण। तुम्हारा मराठा के साथ, अब्राह्मण के साथ, एक थाल में भोजन करना ! ओह ! यह... यह कभी सम्भव था ?

(पुरुषोत्तम फिर कुछ नहीं बोलता। पर दृष्टि उठा अहिल्या की ओर देखने लगता है। अहिल्या चुपचाप उसकी ओर देखती है। कुछ देर निःस्तब्धता।)

अहिल्या - (कुछ देर बाद) जन्म भर का सारा पूजन-अर्चन समाप्त हो जाता! जन्म भर के सारे नियम-व्रत भंग हो जाते !

(पुरुषोत्तम कुछ नहीं बोलता, पर चुपचाप उठकर टहलने लगता है। अहिल्या कुछ देर तक बैठे-बैठे उसकी तरफ देखती रहती है और फिर उठकर उसी के साथ टहलने लगती है।)

अहिल्या - (टहलते हुए) और और फिर यह सब किसी अपने के लिए नहीं, दूसरे के लिए।

(पुरुषोत्तम चुप-चाप खड़े होकर अहिल्या की ओर देखने लगता है। अहिल्या भी खड़ी हो जाती है।)

अहिल्या - हाँ, क्या ... क्या प्रयोजन है हमें शिवाजी से और उसके पुत्र संभाजी से ? दूसरे के लिए हम क्यों अपना इहलोक और परलोक बिगाड़ें, स्वयं नष्ट हों और अपने कुल को नष्ट करें ? (कुछ रुककर) सोचो, ... जरा सोचो तो, कहीं औरंगजेब को पता लग जाय

तो औरंगजेब के सदृश बादशाह क्या करे तुम्हारे और हमारे सारे कुटुम्ब का ?

(पुरुषोत्तम फिर भी कुछ न कह टहलने लगता है। अहिल्या भी उसके साथ टहलती है।)

अहिल्या - (कुछ देर बाद) ठीक...ठीक समय पर भगवान ने तुम्हें सुबुद्धि दी, सारा हाल सचमुच कह देने से अच्छा निर्णय हो ही नहीं सकता था। परलोक बचा, क्योंकि मराठा के साथ खाने से जो धर्म जाता वह धर्म बच गया। इहलोक बचा, क्योंकि राज्य-भय नहीं रह जायेगा। इतना... इतना ही नहीं, संभाजी को पाते ही... तुम्हारे जरिये पाते ही औरंगजेब कितना कितना खुश होगा तुम पर ! कदाचित् कदाचित् तुम मनसबदार हो जाओ। तुम न भी हुए अर्थात् तुमने यदि मनसबदारी अस्वीकृत भी कर दी, तो मनसबदार हो सकता है हमारा लड़का उसी सत्य की शरण के कारण, जिसका जीवन.... हाँ जीवन भर तुमने आश्रय रखा है।

(नेपथ्य में “पण्डित जी !” शब्द होता है।)

अहिल्या - (जल्दी से) लो, लो कदाचित् दिलावरखाँ आ गया। अब... अब सब बातचीत स्पष्ट रूप से कर लो उससे.... (शीघ्रता से प्रस्थान।)

पुरुषोत्तम - (जिसके मुख का रंग ही दिलावरखाँ की आवाज सुन और ही हो गया है, गला साफ करते हुए खिड़की के पास जा मुख बाहर निकाल, नीचे देखते हुए) आ हा हा। दिलावरखाँ साहब ! आइए, आ जाइए।

(दिलावरखाँ और रहमानबेग का प्रवेश)

पुरुषोत्तम - आइए, आइए, मैं पूजा से उठ आप ही लोगों का रास्ता देख रहा था, बैठिए।

दिलावरखाँ - (बिछावन पर बैठते हुए) आप भी तो बैठिए, पण्डित जी।

(दिलावरखाँ और रहमानबेग बिछावन पर बैठ जाते हैं)

पुरुषोत्तम - पूजा के पश्चात् भोजन तक मैं किसी वस्त्र आदि का स्पर्श नहीं करता। पहले आपको झंझट से मुक्त कर दूँ।

दिलावरखाँ - (कुछ सहमते हुए) आपके मुआफिक मुअज्जिज शख्स के लिए जो सबूत मैंने माँगा उसकी कोई जरूरत तो नहीं है, आपकी बात ही सबूत होनी चाहिए, लेकिन....लेकिन आप जानते हैं कि यह सारे सियासी मामलात....

पुरुषोत्तम - नहीं.... नहीं आप कोई संकोच न कीजिए। अपने कर्तव्य का पालन करना धर्म ही है। मैं... मैं भी आपको पूर्ण रूप से सन्तुष्ट कर दूँगा। (जिस दरवाजे से अहिल्या गयी है उसी से जाता है।)

रहमानबेग - जनाब, अब भी शक की कोई गुंजाइश बाकी है ?

दिलावरखाँ - वह खाये तो उस लौंडे के साथ पहले मेरे सामने !

रहमानबेग - पर खाने के बाद ?

दिलावरखाँ - हाँ, खाने के बाद तो शक की कोई गुंजाइश ही नहीं रहनी चाहिए।

(दिलावरखाँ और रहमानबेग उत्कण्ठा से जिस दरवाजे से पुरुषोत्तम गया है, उस दरवाजे की ओर देखते हैं। पुरुषोत्तम का एक हाथ में परसी

हुई थाली और दूसरे हाथ में कलश लिये हुए प्रवेश। थाली में भात, दाल इत्यादि परसे हुए हैं। पुरुषोत्तम की सारी उद्विग्नता नष्ट हो, उसका मुख प्रसन्नता से चमक रहा है। उसके पीछे-पीछे संभाजी आता है। पुरुषोत्तम बिना बिछावन की भूमि पर थाली रखता है, उसी के निकट जल का कलश। थाली के दोनों ओर पुरुषोत्तम और संभाजी बैठ जाते हैं। पुरुषोत्तम भोजन का थोड़ा-थोड़ा अंश निकाल जमीन पर रख, थाली के चारों ओर जल छिड़कता है।)

(अब पुरुषोत्तम और संभाजी दोनों थाली में खाना आरम्भ करते हैं।)

पुरुषोत्तम - (खाते-खाते) कहिए, खाँ साहब, अब भी आपको विश्वास हुआ या नहीं कि विनायक मेरा भानजा है ?

(दिलावरखाँ का मुख शर्म से झुक जाता है। रहमानबेग कभी दिलावरखाँ की तरफ देखता है और कभी पुरुषोत्तम की ओर।)

यवनिका

याद रखिए :

- * भारत एक बहु धर्मीय देश है।
- * हर धर्म का अपना अपना विशिष्ट आचरण होता है।
- * लेकिन आचरण ही धर्म नहीं है।
- * सच्चा धर्म वही है जो आपसी प्रेम को बढ़ावा देता हो और किसी को हानि नहीं पहुँचाता हो।

लेखक परिचय : सेठ गोविन्ददास का जन्म १६ अक्टूबर १८९६ में जबलपुर (मध्यप्रदेश) में हुआ था। राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार और प्रसार के लिए आप निरंतर कार्य करते रहे। हिंदी के नाटककारों में आपका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। आपने लगभग कई नाटकों की रचना की हैं। आपने अनेक एकांकी भी लिखे हैं। आपके नाटकों एवं एकांकियों की कथावस्तु पौराणिक, ऐतिहासिक तथा आधुनिक जीवन की समस्याओं से संबंधित रही है। आपकी कुछ रचनाएँ ये हैं : एकादशी, कर्तव्य, सेवापथ और सात रश्मी आदि। १८ जून १९७४ को आपका स्वर्गवास हो गया।

शब्दार्थ :

उपरना - ओढ़ने का वस्त्र, झोला - ढीला कुर्ता, आसरा - आश्रय, सहारा, यवन - मुसलमान, व्यथित - दुखी, चौथापन - वृद्धावस्था, सदृश - जैसा, समान, विश्वासघात - धोखा, जिसने हम पर विश्वास किया, हम उसके साथ धोखा करें, तो वही विश्वासघात है, पातक - पाप, जनाब - श्रीमान, बिरेहमन - ब्राह्मण, शक - संदेह, गुंजाइश - संभावना, स्थान, कौम - जाति, उद्वेग - व्याकुलता, बेचैनी, प्रयोजन - उद्देश्य, इहलोक - इस संसार का जीवन, परलोक - मरने के बादवाला जीवन, अधेड़ अवस्था - ५० से लेकर ६० साल तक की अवस्था, उद्विग्नता - चिंता, दृष्टिगोचर होना - दिखना, यवनिका - परदा, मातहत - अधीन, यज्ञोपवीत - जनेऊ, तिलांजली देना - छोड़ देना, त्याग देना, सियासी - राजकारण संबंधी, मामलात - विषय, बिछावन - बिछाने का वस्त्र, भानजा - बहन का बेटा, मुआफिक - जैसा, मुअज्जिज - आदरणीय, इज्जतवाला, शख्स - व्यक्ति, लौंडा - लडका, त्रिपुण्ड - भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक जो शैव लोग ललाट पर लगाते हैं। मनसबदार - सेनापति।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. पुरुषोत्तम का घर कहाँ था ?
२. अहिल्या की उम्र क्या थी ?
३. अहिल्या के अनुसार किसके साथ भोजन करने से धर्मभ्रष्ट हो जायेगा ?
४. दिलावरखाँ और रहमानबेग को पुरुषोत्तम कहाँ बिठाते हैं ?
५. पुरुषोत्तम और संभाजी खाने के लिए किस तरह बैठते हैं ?

II. दो या तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. दिलावरखाँ और रहमानबेग कौन हैं ?
२. विनायक कौन था और उसका पुरुषोत्तम से क्या संबंध था ?
३. दिलावरखाँ और रहमानबेग देखने में कैसे थे ?
४. पुरुषोत्तम के अब्राहमण के साथ भोजन करने से क्या परिणाम होता ?
५. पुरुषोत्तम भोजन की तैयारियाँ कैसे करते हैं ?

III. चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. पुरुषोत्तम के चरित्र पर प्रकाश डालिए।
२. पुरुषोत्तम को विनायक के साथ क्यों भोजन करना पड़ा ?
३. पुरुषोत्तम के सामने कौन-सा असाधारण प्रश्न है ?
४. दिल्ली की एक गली में दिलावरखाँ और रहमानबेग पुरुषोत्तम के बारे में क्या बातचीत करते हैं ?
५. लेखक की राय में सच्चा धर्म क्या है ?

IV. संदर्भ के साथ स्पष्ट कीजिए :

१. “तुम्हारी सत्य प्रियता अधिकांश दिल्ली में प्रसिद्ध है।”
२. “पूजा के पश्चात् भोजन तक मैं किसी वस्त्र आदि का स्पर्श नहीं करता।”
३. “जनाब, अब भी शक की कोई गुंजाइश बाकी है ?”
४. “पुरुषोत्तम के मानिन्द बिरेहमन तो कभी नहीं”।

V. रिक्त स्थान भरिए :

१. पुरुषोत्तम की पत्नी है।
२. जीवन में से बड़ी कोई चीज़ नहीं।
३. अहिल्या कहती है कि जन्म भर के सारे भंग हो जाते।
४. दिलावरखाँ को आश्चर्य होता है कि कोई किसी नीच कौम के साथ बैठकर थोड़े ही खा सकता है ?
५. दिन भर का भूला-भटका यदि रात को घर लौट आए तो वह नहीं कहलाता।

VI. जोड़कर लिखिए :

अ	ब
१. पुरुषोत्तम	भानजा
२. बादशाह	मातहत
३. दिल्ली से भागनेवाला	ब्राह्मण
४. विनायक	औरंगजेब
५. रहमानबेग	सेनानायक
	शिवाजी

VII. बहु वचन रूप लिखिए :

- (१) समस्या (२) पत्नी (३) साड़ी
(४) लडका (५) टोकरी

VIII. विलोम शब्द लिखिए :

- (१) पीछे (२) सफेद (३) सत्य
(४) मुश्किल (५) सफल

IX. स्त्री लिंग रूप लिखिए :

- (१) लेखक (२) पंडित (३) पुत्र
(४) पति (५) बादशाह

X. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

- (१) मकान (२) खेत (३) कुटुम्ब
(४) सदा (५) वक्त

XI. इन शब्दों का विच्छेद करके संधि का नाम लिखिए :

- (१) पुरुषोत्तम (२) यज्ञोपवीत (३) इत्यादि

XII. इन सामासिक शब्दों का विग्रह करके समास का नाम बताइए :

- (१) पुरुषोत्तम (२) त्रिपुंड (३) धर्मरक्षा
(४) शरणागत (५) पूजन-अर्चन (६) सुबुद्धि

योग्यता विस्तार:

- * इस एकांकी का अभिनय कीजिए ।
* विष्णुप्रभाकर जी की अन्य एकांकियों को पढ़िए ।



एक कुत्ता और एक मैना



- हजारी प्रसाद द्विवेदी

(आशय: कवींद्र रवींद्र जी अपने आश्रम में रहनेवाले व्यक्ति के अलावा आश्रम और उसके पास रहनेवाले पेड़-पौधे, पशु-पक्षियों को भी संवेदनशील दृष्टिकोण से देखा करते थे। इसका उदाहरण हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने हमें इस पाठ द्वारा परिचय कराया है।)

आज से कई वर्ष पहले गुरुदेव के मन में आया कि शांतिनिकेतन को छोड़कर कहीं अन्यत्र जाएँ। स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं था। शायद इसलिए, या पता नहीं क्यों, वे श्रीनिकेतन के पुराने तिमंजिले मकान में कुछ दिन रहें। शायद मौज में आकर ही उन्होंने यह निर्णय किया हो। वे सबसे ऊपर के तल्ले में रहने लगे। उन दिनों ऊपर तक पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ियाँ थीं, और वृद्ध और क्षीणवपु रवींद्रनाथ के लिए उस पर चढ़ सकना असंभव था। फिर भी बड़ी कठिनाई से उन्हें वहाँ ले जाया जा सका।



रवींद्रनाथ ठाकुर

उन दिनों छुट्टियाँ थीं। आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गए थे। एक दिन हमने सपरिवार उनके 'दर्शन' की ठानी। 'दर्शन' को मैं जो यहाँ विशेष रूप से दर्शनीय बनाकर लिख रहा हूँ, उसका कारण यह है कि गुरुदेव के पास जब कभी मैं जाता था तो प्रायः वे यह कहकर मुसकरा देते थे कि 'दर्शनार्थी हैं क्या?' शुरू-शुरू में मैं उनसे ऐसी

बांग्ला में बात करता था, जो वस्तुतः हिंदी-मुहावरों का अनुवाद हुआ करती थी। किसी बाहर के अतिथि को जब मैं उनके पास ले जाता था तो कहा करता था, 'एक भद्र लोक आपनार दर्शनर जन्य ऐसे छेन।' यह बात हिंदी में जितनी प्रचलित है, उतनी बांग्ला में नहीं। इसलिए गुरुदेव जरा मुसकरा देते थे। बाद में मुझे मालूम हुआ कि मेरी यह भाषा बहुत अधिक पुस्तकीय है और गुरुदेव ने उस 'दर्शन' शब्द को पकड़ लिया था। इसलिए जब कभी मैं असमय में पहुँच जाता था तो वे हँसकर पूछते थे 'दर्शनार्थी लेकर आए हो क्या?' यहाँ यह दुख के साथ कह देना चाहता हूँ कि अपने देश के दर्शनार्थियों में कितने ही इतने प्रगल्भ होते थे कि समय-असमय, स्थान-अस्थान, अवस्था-अनवस्था की एकदम परवा नहीं करते थे और रोकते रहने पर भी आ ही जाते थे। ऐसे 'दर्शनार्थियों' से गुरुदेव कुछ भीत-भीत से रहते थे। अस्तु, मैं बाल-बच्चों के साथ एक दिन श्रीनिकेतन जा पहुँचा। कई दिनों से उन्हें देखा नहीं था।

गुरुदेव वहाँ बड़े आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड़-भाड़ उतनी नहीं होती थी, जितनी शान्तिनिकेतन में। जब हम लोग ऊपर गए तो गुरुदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्तगामी सूर्य की ओर ध्यान-स्तिमित नयनों से देख रहे थे। हम लोगों को देखकर मुसकराए, बच्चों से जरा छेड़-छाड़ की, कुशल-प्रश्न पूछे और फिर चुप हो रहे। ठीक उसी समय उनका कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया और उनके पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आँखें मूँदकर अपने रोम-रोम से उस स्नेह-रस का अनुभव करने लगा। गुरुदेव ने हम लोगों की ओर देखकर कहा, "देखा तुमने, यह आ गए। कैसे इन्हें मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ, आश्चर्य है! और देखो, कितनी परितृप्ति इनके चेहरे पर दिखाई दे रही है।"

हम लोग उस कुत्ते के आनंद को देखने लगे। किसी ने उसे राह नहीं दिखाई थी, न उसे यह बताया था कि उसके स्नेह-दाता यहाँ से दो मील दूर हैं और फिर भी वह पहुँच गया। इसी कुत्ते को लक्ष्य करके उन्होंने 'आरोग्य' में इस भाव की एक कविता लिखी थी 'प्रतिदिन प्रातःकाल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर आसन के पास तब तक बैठा रहता है, जब तक अपने हाथों के स्पर्श से मैं इसका संग नहीं स्वीकार करता। इतनी-सी स्वीकृति पाकर ही उसके अंग-अंग में आनंद का प्रवाह बह उठता है। इस वाक्यहीन प्राणिलोक में सिर्फ यही एक जीव अच्छा-बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सका है, उस आनंद को देख सका है, जिसे प्राण दिया जा सकता है, जिसमें अहैतुक प्रेम ढाल दिया जा सकता है, जिसकी चेतना असीम चैतन्य लोक में राह दिखा सकती है। जब मैं इस मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन देखता हूँ, जिसमें वह अपनी दीनता बताता रहता है, तब मैं यह सोच ही नहीं पाता कि उसने अपने सहज बोध से मानव स्वरूप में कौन-सा मूल्य आविष्कार किया है, इसकी भाषाहीन दृष्टि की करुण व्याकुलता जो कुछ समझती है, उसे समझा नहीं पाती और मुझे इस सृष्टि में मनुष्य का सच्चा परिचय समझा देती है।' इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

मैं जब यह कविता पढ़ता हूँ तब मेरे सामने श्रीनिकेतन के तितल्ले पर की वह घटना प्रत्यक्ष-सी हो जाती है। वह आँख मूँदकर अपरिसीमित आनंद, वह 'मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन' मूर्तिमान हो जाता है। उस दिन मेरे लिए वह एक छोटी-सी घटना थी, आज

वह विश्व की अनेक महिमाशाली घटनाओं की श्रेणी में बैठ गई है। एक आश्चर्य की बात और इस समय में उल्लेख की जा सकती है। जब गुरुदेव का चिताभस्म कलकत्ते (कोलकाता) से आश्रम में लाया गया, उस समय भी न जाने किस सहज बोध के बल पर वह कुत्ता आश्रम के द्वार तक आया और चिताभस्म के साथ अन्यान्य आश्रमवासियों के साथ शांत गंभीर भाव से उत्तरायण तक गया। आचार्य क्षितिमोहन सेन सबके आगे थे। उन्होंने मुझे बताया कि वह चिताभस्म के कलश के पास थोड़ी देर चुपचाप बैठा भी रहा।

कुछ और पहले की घटना याद आ रही है। उन दिनों शांतिनिकेतन में नया ही आया था। गुरुदेव से अभी उतना धृष्ट नहीं हो पाया था। गुरुदेव उन दिनों सुबह अपने बगीचे में टहलने के लिए निकला करते थे। मैं एक दिन उनके साथ हो गया था। मेरे साथ एक और पुराने अध्यापक थे और सही बात तो यह है कि उन्होंने ही मुझे भी अपने साथ ले लिया था। गुरुदेव एक-एक फूल-पत्ते को ध्यान से देखते हुए अपने बगीचे में टहल रहे थे और उक्त अध्यापक महाशय से बातें करते जा रहे थे। मैं चुपचाप सुनता जा रहा था। गुरुदेव ने बातचीत के सिलसिले में एक बार कहा, 'अच्छा साहब, आश्रम के कौए क्या हो गए? उनकी आवाज सुनाई ही नहीं देती?' न तो मेरे साथी उन अध्यापक महाशय को यह खबर थी और न मुझे ही। बाद में मैंने लक्ष्य किया कि सचमुच कई दिनों से आश्रम में कौए नहीं दीख रहे हैं। मैंने तब तक कौओं को सर्वव्यापक पक्षी ही समझ रखा था। अचानक उस दिन मालूम हुआ कि ये भले आदमी भी कभी-कभी प्रवास को चले जाते हैं या चले जाने को बाध्य होते हैं। एक लेखक ने कौओं की

आधुनिक साहित्यिकों से उपमा दी है, क्योंकि इनका मोटो है 'मिसचिफ़ फार मिसचिफ़ सेक' (शरारत के लिए ही शरारत)। तो क्या कौओं का प्रवास भी किसी शरारत के उद्देश्य से ही था? प्रायः एक सप्ताह के बाद बहुत कौए दिखाई दिए।

एक दूसरी बार मैं सवेरे गुरुदेव के पास उपस्थित था। उस समय एक लँगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, “देखते हो, यह यूथभ्रष्ट है। रोज फुदकती है, ठीक यहीं आकर। मुझे इसकी चाल में एक करुण-भाव दिखाई देता है।” गुरुदेव ने अगर कह न दिया होता तो मुझे उसका करुण-भाव एकदम नहीं दीखता। मेरा अनुमान था कि मैना करुण भाव दिखानेवाला पक्षी है ही नहीं। वह दूसरों पर अनुकंपा ही दिखाया करती है। तीन-चार वर्ष से मैं एक नए मकान में रहने लगा हूँ। मकान के निर्माताओं ने दीवारों में चारों ओर एक-एक सूराख छोड़ रखी है। यह कोई आधुनिक वैज्ञानिक खतरे का समाधान होगा। सो, एक मैना-दंपति नियमित भाव से प्रतिवर्ष हर साल यहाँ गृहस्थी जमाया करते हैं, तिनके और चीथड़ों का अंबार लगा देते हैं। भलेमानस गोबर के टुकड़े तक ले आना नहीं भूलते। हैरान होकर हम सूराखों में ईंटें भर देते हैं, परंतु वे खाली बची जगह का भी उपयोग कर लेते हैं। पति-पत्नी जब कोई एक तिनका लेकर सूराख में रखते हैं तो उनके भाव देखने लायक होते हैं। पत्नी देवी का तो क्या कहना! एक तिनका ले आई तो फिर एक पैर पर खड़ी होकर जरा पंखों को फटकार दिया, चोंच को अपने ही पंखों से साफ कर लिया और नाना प्रकार की मधुर और विजयोद्घोषी वाणी में गान शुरू कर दिया। हम लोगों की तो उन्हें कोई परवा ही नहीं रहती। अचानक इसी समय अगर पति देवता भी

कोई कागज का या गोबर का टुकड़ा लेकर उपस्थित हुए तब तो क्या कहना! दोनों के नाच-गान और आनंद-नृत्य से सारा मकान मुखरित हो उठता है। इसके बाद ही पत्नी देवी ज़रा हम लोगों की ओर मुखातिब होकर लापरवाही-भरी अदा से कुछ बोल देती हैं। पति देवता भी मानो मुसकराकर हमारी ओर देखते, कुछ रिमार्क करते और मुँह फेर लेते हैं। पक्षियों की भाषा तो मैं नहीं जानता; पर मेरा निश्चित विश्वास है कि उनमें कुछ इस तरह की बातें हो जाया करती हैं:

पत्नी-ये लोग यहाँ कैसे आ गए जी?

पति-उँह बेचारे आ गए हैं, तो रह जाने दो। क्या कर लेंगे!

पत्नी-लेकिन फिर भी इनको इतना तो खयाल होना चाहिए कि यह हमारा प्राइवेट घर है।

पति-आदमी जो हैं, इतनी अकल कहाँ?

पत्नी-जाने भी दो।

पति-और क्या!

सो, इस प्रकार की मैना कभी करुण हो सकती है, यह मेरा विश्वास ही नहीं था। गुरुदेव की बात पर मैंने ध्यान से देखा तो मालूम हुआ कि सचमुच ही उसके मुख पर एक करुण भाव है। शायद यह विधुर पति था, जो पिछली स्वयंवर-सभा के युद्ध में आहत और परास्त हो गया था। या विधवा पत्नी है, जो पिछले बिड़ाल के आक्रमण के समय पति को खोकर युद्ध में ईषत् चोट खाकर एकांत विहार कर रही है। हाय, क्यों इसकी ऐसी दशा है! शायद इसी मैना को लक्ष्य करके गुरुदेव ने बाद में एक कविता लिखी थी, जिसके कुछ अंश का सार इस प्रकार है:

“उस मैना को क्या हो गया है, यही सोचता हूँ। क्यों वह दल से अलग होकर अकेली रहती है? पहले दिन देखा था सेमर के पेड़ के नीचे मेरे बगीचे में। जान पड़ा जैसे एक पैर से लँगड़ा रही हो। इसके बाद उसे रोज़ सवेरे देखता हूँ-संगीहीन होकर कीड़ों का शिकार करती फिरती है। चढ़ जाती है बरामदे में। नाच-नाचकर चहलकदमी किया करती है, मुझसे ज़रा भी नहीं डरती। क्यों है ऐसी दशा इसकी? समाज के किस दंड पर उसे निर्वासन मिला है, दल के किस अविचार पर है? कुछ ही दूरी पर और मैनाएँ बक-झक कर रही हैं, घास पर उछल-कूद रही हैं, उड़ती फिरती हैं शिरीषवृक्ष की शाखाओं पर। इस बेचारी को ऐसा कुछ भी शौक नहीं है। इसके जीवन में कहाँ गाँठ पड़ी है, यही सोच रहा हूँ। सवेरे की धूप में मानो सहज मन से आहार चुगती हुई झड़े हुए पत्तों पर कूदती फिरती है सारा दिन। किसी के ऊपर इसका कुछ अभियोग है, यह बात बिलकुल नहीं जान पड़ती। इसकी चाल में वैराग्य का गर्व भी तो नहीं है, दो आग-सी जलती आँखें भी तो नहीं दिखतीं।” इत्यादि।

जब मैं इस कविता को पढ़ता हूँ तो उस मैना की करुण मूर्ति अत्यंत साफ होकर सामने आ जाती है। कैसे मैंने उसे देखकर भी नहीं देखा और किस प्रकार कवि की आँखें उस बिचारी के मर्मस्थल तक पहुँच गई, सोचता हूँ तो हैरान हो रहता हूँ। एक दिन वह मैना उड़ गई। सायंकाल कवि ने उसे नहीं देखा। जब वह अकेले जाया करती है उस डाल के कोने में, जब झींगुर अंधकार में झनकारता रहता है, जब हवा में बाँस के पत्ते झरझराते रहते हैं, पेड़ों की फाँक से पुकारा करता है नींद तोड़ने वाला संध्यातारा! कितना करुण है उसका गायब हो जाना!

याद रखिए।

- * पशु-पक्षियों की चाल समझने के लिए सूक्ष्म मन की आवश्यकता होती है।
- * रवींद्र जी सूक्ष्म द्रष्टि से पशु-पक्षियों की चाल परखते थे।
- * पशु-पक्षी भी लोगों की भाँति समय-समय पर अपने भाव अभिव्यक्त कर सकते हैं।

लेखक परिचय : हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का जन्म १९ अगस्त १९०७ में उत्तर प्रदेश राज्य के बलिया जिले के आरत दूबे का छपरा नामक ग्राम में हुआ था। उन्होंने उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने शांतिनिकेतन, काशी हिंदू विश्वविद्यालय एवं पंजाब विश्वविद्यालय में अध्यापन-कार्य किया। १९७९ में उनका देहांत हो गया।

अशोक के फूल, कुटज, कल्पलता, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा, हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास, हिंदी साहित्य की भूमिका, कबीर-उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं पद्मभूषण अलंकरण से सम्मानित किया गया।

शब्दार्थ :

अस्तगामी-डूबता हुआ, परितृप्ति-पूरी तरह संतोष प्राप्त करना, आरोग्य - बाँग्ला भाषा की एक पत्रिका, प्राणपण-जान की बाजी, मर्मभेदी - अति दुखद; दिल को लगने वाला, तितल्ले-तीसरी मंजिल, उत्तरायण-शांतिनिकेतन में उत्तर दिशा की ओर रवींद्रनाथ टैगोर का एक निवास स्थान, धृष्ट-लज्जा रहित, अभियोग-आरोप, यूथभ्रष्ट-समूह या झुंड से निकला या निकाला हुआ, प्रगल्भ-उत्कृष्ट बुद्धिवाला, भीत-भयग्रस्त, मय-सहित; समेत, तल्ला-(मकान का) मंजिल, वपु-देह अहैतुक-अकारण; बिना कोई कारण, ईषत् - आंशिक; कुछ निर्वासन- बहिष्कार; निकाला, फाँक-खण्ड;

भाग, मुखातिब-संबोधन करनेवाला, बिड़ाल-बिल्ली, भलेमानस-सज्जन,
अंबार-ढेर

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. गुरुदेव ने कुत्ते के बारे में क्या कहा ?
२. रवींद्र जी ने शांतिनिकेतन छोड़कर कहाँ रहने का निर्णय लिया था ?
३. कौओं के बारे में रवींद्र जी ने कौन-से प्रश्न पूछे ?
४. मैना के बारे में रवींद्र जी ने क्या कहा था ?
५. मैना दंपति नाच-गान क्यों करते थे ?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. रवींद्र जी ने श्रीनिकेतन में रहने का निर्णय क्यों लिया था ?
२. कुत्ते को देखकर रवींद्र जी का व्यवहार कैसा था ?
३. कोलकाता के आश्रम में कुत्ते ने कैसा बर्ताव किया था ?
४. मैना के बारे में रवींद्र जी ने क्या कहा ?
५. रवींद्र जी की कविता (मैना के बारे में) पढ़कर लेखक ने कैसा भाव व्यक्त किया है ?

III. चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. दर्शन शब्द और दर्शनार्थी के बारे में लेखक का क्या अभिप्राय है ?
२. कुत्ते के बारे में लिखी हुई कविता पढ़कर निबंधकार ने क्या अनुभव किया है ?
३. रवींद्र जी कौओं के बारे में पूछने पर लेखक ने क्या सोचा ?

४. मैना के बारे में रवींद्र जी के विचार और लेखक के विचारों में क्या अंतर था ?

IV. किसने कहा ? और किससे कहा ?

१. दर्शनार्थी लेकर आये हो क्या ?
२. देखा तुमने, यह आ गए।
३. रोज़ फुदकती है, ठीक यहीं आकर।
४. आदमी जो है, इतनी अकल कहाँ ?

V. संधि विच्छेद कर संधि का नाम लिखिए :

दर्शनार्थी, रवींद्र, अधिकांश, अन्यान्य, महाशय, इत्यादि

VI. कोष्ठक में दिए गए उपसर्गों को जोड़कर नए शब्द बनाइए:

[आ, वि, सं, अनु, प्र, अ, सु, कु]

[उदा : हार - आहार, विहार, संहार, प्रहार]

ज्ञान, दान, शांति, पुत्र, भव, भाव, रीति, रूप, बंध,
सार, काश, ढंग, शोधन, करण, धर्म, शेष, श्रम, सहज, चार

VII. विलोम शब्द लिखिए :

कठिन, सवाल, गुरु, अपना, गंभीर, उन्नति
सुप्रसिद्ध, पंडित, अनुभव, क्षत

VIII. अन्य वचन रूप लिखिए :

प्रश्न, मानव, गुरु, पूँछ, स्वीकृति, बगीचे,
प्राणी, आदमी, श्रेणी, नारियाँ, वधुएँ

IX. उदाहरण के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए :

१. रवींद्र जी ने इस भाव की एक कविता लिखी थी।
(वर्तमान काल में बदलिए)

२. कुछ और पहले की घटना याद आ रही है।
(भूतकाल में बदलिये)
३. कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया । (भविष्यत् काल में बदलिये)
४. यह कोई आधुनिक वैज्ञानिक खतरे का समाधान होगा।
(वर्तमान काल में बदलिये)

X. 'इक' प्रत्यय जोड़िए :

उदा : विज्ञान + इक = वैज्ञानिक

नीति, भूगोल, पक्ष, देह, परिवार, कुटुंब, वर्ष, मास, दिन, अर्थ

XI. विग्रह कर समास पहचानिए :

प्रतिदिन, पति-पत्नी, शांतिनिकेतन, चिताभस्म,
स्वयंवर-सभा, एकांत

योग्यता विस्तार :

- * हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के कुछ अन्य मर्मस्पर्शी निबंध जैसे अशोक के फूल और नाखून क्यों बढ़ता है पढ़िए।





(आशय: अनेक संत कवियों ने दोहों की रचना की है। दोहे देखने में छोटे लगने पर भी वास्तव में विस्तृत, गहन अर्थ और भाव रखते हैं। इनमें भक्ति नीति, जीवनमूल्य - आदि विषय हमें मिलते हैं।)

ज्यों तिल माँही तेल है, ज्यों चकमक में आगि।

तेरा साई तुज्झ में, जागि सकें तो जागि ॥

जिनि ढूँढा तिनि पाइयाँ, गहरे पानी पैठि।

हौ बौरी डूबन डरी, रही किनारे बैठि ॥

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।

सार सार को गहि रहै, थोथा देई उडाय ॥

- कबीर

जो रहीम मन हाथ है, तो तन कहु बिन जाहि।

जल में जो छाया परे, काया भीजति नाहिं ॥

जो गरीब सो हित करै, धनि रहीम वे लोग।

कहाँ सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।

चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ॥

- रहीम

जपमाला, छापै तिलक, सरै न एकौ कामु ।

मन कांचै नाचै वृथा, सांचै रांचै राम ॥

बड़े न हूजै गुनन बिनु, बिरुद बड़ाई पाइ ।

कहत धतूरे सौ कनकु, गहनौ गढ्यौ न जाइ ॥

इही आस अटक्यौ रहतु, अलि गुलाब के मूल ।

हैहै फेरि वसंत ऋतु, इन डारन वे फूल ॥

- बिहारी

जपत एक हरिनाम ते, पातक कोटि बिलाय ।

एकहि कनिका आगि ते, घास ढेर जरि जाय ॥

नैना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत ।

जैसे-निर्मल आरसी, भली बुरी कह देत ॥

मधुर वचन ते जात मिट, उत्तम जन अभिमान ।

तनिक सीत जल सो मिटै, जैसे-दूध उफ़ान ॥

- वृंद

याद रखिए :

- * प्रत्येक शरीर में भगवान निवास करता है ।
- * परिश्रम का फल मीठा होता है ।
- * आडंबर हीन, उत्तम स्वभाव, दूसरों के संकट में सहानुभूति, मीठे वचन - आदि गुणों से हमें परिपूर्ण होना चाहिए ।
- * व्यक्ति की आँखें हृदय के भाव को स्पष्ट करती हैं।

(अ) कबीर के दोहे :

कवि परिचय : कबीरदास का जन्म काशी में हुआ। वे रामानंद के शिष्य थे। निर्गुणोपासक कवि, समाज सुधारक थे। 'साखी', 'सबद' और 'रमैनी' इनकी कृतियाँ हैं। ये तीनों 'बीजक' नामक ग्रंथ में संग्रहीत हैं। कबीर की नीतिपरक रचनाएँ बहुत लोकप्रिय हुई हैं। मगहर में इनकी मृत्यु हो गयी। अपनी सरल भाषा और सीधे-सादे विचारों के कारण कबीर लोकप्रिय हुए।



कबीरदास

पहला दोहा : शब्दार्थ : साई-भगवान, माहि-में, चकमक-वह पत्थर जिसको रगड़ने से आग निकलती है, तुझ में-तुझ में

कबीरदास कहते हैं - जिस प्रकार तिल में तेल होता है, और चकमक पत्थर में आग होती है, उसी प्रकार तुम्हारा भगवान तुममें ही बसा हुआ है, उसे जगा सको, तो जगा लो।

दूसरा दोहा : शब्दार्थ - बौरी-पगली, पैठना-डूबना

गहरे पानी में गोता लगाकर जिसने ढूँढा उसीने पाया। मोती ढूँढनेवाले समुद्र के तल तक पहुँचकर ही मोती लाते हैं उसी तरह परमात्मा रूपी मोती को पाने के लिए भगवद् प्रेम रूपी सागर में डुबकी लगानी चाहिए। डूबने के डर से किनारे बैठने से मोती प्राप्त नहीं होते।

तीसरा दोहा: शब्दार्थ - सूप - अनाज पछोड़ने का साधन, थोथा - निस्सार वस्तु।

कबीरदास का कहना है - साधु का स्वभाव सूप जैसा होना चाहिए। जिस प्रकार सूप सार वस्तु को थोथे से अलग करता है, उसी प्रकार साधु को चाहिए कि केवल सार को ग्रहण करे, और असार को छोड़ दे।

(आ) रहीम के दोहे :

कवि परिचय : रहीम का पूरा नाम था, अब्दुरहीम खानखाना। इनका जन्म १६१० में हुआ। ये संस्कृत, अरबी, फ़ारसी तथा हिंदी के मर्मज्ञ विद्वान थे। भगवान कृष्ण में इनकी भक्ति अधिक थी। स्वभाव से सरल और दयालु थे। संवत् १६८२ में स्वर्ग सिधारे।



रहीम

रहीम ने हिंदी में - रहीम सतसई, बरवै नायिका भेद, रास पंचाध्यायी, श्रृंगार सोरठा, मदनाष्टक नाम की रचनाएँ की हैं।

पहला दोहा : शब्दार्थ - तन-शरीर, भीजना - भीगना

रहीम कहते हैं - यदि मन पर नियंत्रण हो, तो शरीर भी नियंत्रण में रहेगा। क्योंकि देह तो मन का अनुसरण करती है। पानी पर छाया पड़ने से क्या शरीर कभी भीगता है ?

दूसरा दोहा : शब्दार्थ - मिताई - मित्रता, जोग - योग, संबंध

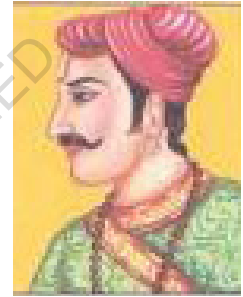
जो गरीब लोगों का हित करते हैं, सचमुच वे ही धनी होते हैं। सुदामा तो गरीब थे। परन्तु कृष्ण से उसने मित्रता निभाई। वे दोनों स्नेह के योग्य थे।

तीसरा दोहा : शब्दार्थ - प्रकृति-स्वभाव, भुजंग-सर्प

जो व्यक्ति उत्तम स्वभाववाला होता है, उसके बुरी संगत में बैठने से कुछ हानि नहीं होती। चंदन के पेड़ को सांप के लपेटने से भी उसको विष प्रभावित नहीं कर पाता।

(इ) बिहारी के दोहे :

कवि परिचय : बिहारीलाल का जन्म ग्वालियर के गोविंदपुर गाँव में हुआ। जन्म तिथि १६६० मानी जाती है। बिहारी की गणना रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में की जाती है। 'सतसई' ने इनका नाम अमर कर दिया। प्रेम, सौंदर्य और प्रकृति के अतिरिक्त बिहारी ने भक्ति और नीति के दोहे भी लिखे हैं। थोड़े में बहुत कुछ कहकर 'गागर में सागर' भर दिया।



बिहारी

सतसई में ब्रजभाषा की मधुरता और सरसता देखते ही बनती है।

पहला दोहा : शब्दार्थ : जप-मंत्रस्मरण, छापै-चिन्हित करना, सरै-सिद्ध होना, कांचै-कच्चा, काँच का, साँचै-सच्चा।

कवि आडंबरपूर्ण भक्ति का खंडन करते हुए कहता है कि किसी मंत्र विशेष की माला लेकर स्मरण करने तथा मस्तक एवं शरीर के अन्य अंगों पर तिलक छापे लगाने से तो कभी काम सिद्ध नहीं हो पाता। इस प्रकार के भक्त का मन कच्चा तथा चंचल होता है। राम तो केवल अच्छे हृदय में निवास करते हैं, कच्चा मन तो काँच है जो कभी भी टूट सकता है।

दूसरा दोहा : शब्दार्थ : हूजै - हो सकता, बिरुद-यश, कनक-धतूरा, सोना, सुवर्ण

कवि यहाँ पर यह कहना चाहता है कि कोई भी व्यक्ति किसी नाम से नहीं, गुण और कार्यों से पहचाना जाता है। यदि किसी भी वस्तु की असीम प्रशंसा करें तो और यदि उसमें उन गुणों का अभाव हो तो - वह बड़ी नहीं हो सकती क्योंकि जैसे धतूरे को कनक भी कहते हैं परंतु उससे कोई आभूषण नहीं बनाया जा सकता।

तीसरा दोहा : शब्दार्थ : अलि-भ्रमर, अटकना - रुकना

कवि की उक्ति है कि विपरीत समय आने पर सच्चे प्रिय जन अपने आश्रय स्थल को एकदम नहीं छोड़ते। वे अच्छे समय के लौटने के इंतज़ार में उसके साथ ही रहते हैं। दुर्दिन को देखकर गुलाब का प्रेमी भौरा पुष्प-रहित गुलाब के पौधे की जड़ में अटका रहता है कि पुनः वसंतऋतु आएगी और इन डालों में पूर्ववत् रंगीन पुष्प और पत्ते खिलेंगे।

(ई) वृन्द के दोहे :

कवि परिचय : वृन्द का जन्म सन् १७०० में जोधपुर राज्य के मेड़ता नामक गाँव में हुआ। इनकी रचनाओं में सूक्तियों की प्रमुखता होती है। इनके नीति संबन्धी दोहे बहुत ही लोकप्रिय हो चुके हैं। इनके दोहे भावपूर्ण एवं हृदयग्राही होते हैं। वृन्द की कृतियों में 'वृन्द सतसई' अलंकार सतसई, भाव पंचशिखा श्रृंगार शिक्षा, रूपक वचनिका, सत्य स्वरूप आदि प्रमुख हैं। १७८० में वृन्द स्वर्गवासी हुए।



वृन्द

पहला दोहा : शब्दार्थ : कनिका-चिनगारी, जरना-जलना, बिलाय - दूर होते हैं। जपत-जप करने से, ढेर-राशी

वृन्द कवि कहते हैं - भगवान के नाम मात्र का जप करने से कोटि कष्ट दूर हो जाते हैं। उदाहरण के लिए आग की एक चिनगारी के पड़ने से घास का ढेर जल जाता है।

दूसरा दोहा : शब्दार्थ : आरसी - आईना, नैना - आँख

कवि कहते हैं - व्यक्ति की आँखे देखने पर हृदय की सब भावनाएँ स्पष्ट लक्षित होती हैं।

तीसरा दोहा : शब्दार्थ : उफ़ान - उबलना, मिटना - नाश होना

मीठी वाणी से क्रोध शांत हो जाता है, जैसे कि उबलते दूध पर शीतल जल की छींटे पड़ने से उफ़ान कम हो जाता है।

अभ्यास

I. इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

१. कबीर के अनुसार भगवान का निवास स्थान कहाँ होता है ?
२. इसके लिए कवि ने कौन-कौन सी उपमाएँ दी है ?
३. कवि के अनुसार मनचाही वस्तु पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?
४. समुद्र को रत्नाकर कहते हैं। उसके गहरे पानी में गोता लगाकर ढूँढने से क्या मिलता है ?
५. डूबने से डरकर किनारे बैठें तो क्या होगा ?
६. साधु कैसा होना चाहिए ? कवि ने कौन-कौन-सी उपमा देकर इस बात को स्पष्ट किया है ?

७. शरीर पर नियंत्रण रखना हो, तो हमें क्या करना चाहिए ?
८. रहीम के अनुसार काया कौन है ? और छाया कौन है ?
९. सच्चा धनी कौन है ? कौन-सा उदाहरण देकर रहीम ने इस बात को समझाया है ?
१०. बुरे लोगों के साथ रहने पर भी मनुष्य अच्छा रह सकता है। इस बात को रहीम ने कैसे समझाया है ?
११. बिहारी जपमाला, तिलक आदि को बेकार क्यों समझते हैं ?
१२. सच्ची भक्ति कवि के अनुसार किसमें हैं ?
१३. बड़प्पन अच्छे नाम या बिरुद से नहीं होता यह बात कवि ने कैसे समझायी है ?
१४. भ्रमर गुलाब के मूल में ही क्यों रुका रहता है ?
१५. भ्रमर के इस व्यवहार से हमें क्या सीख मिलती है ?
१६. मानव के पाप किस प्रकार नाश हो सकते हैं ? इस बात को समझाने के लिए कवि ने कौन-सा उदाहरण दिया है ?
१७. वृंद ने 'आँख' और 'आईना' की तुलना क्यों की है ?
१८. मीठे वचन से क्या हो सकता है ? इस बात को समझाने के लिए कवि ने कौन-सा उदाहरण दिया है ?

II. दोहों को पूर्ण कीजिए :

१. साधु
..... देई उड़ाय
२. जो गरीब
..... मिताई जोग

३. मधुर वचन
..... दूध उफान।

III. दोहों के भावार्थ लिखिए :

१. जिनि दूँढा तिनि पाइयाँ, गहरे पानी पैठि ।
हौ बौरी हूबन डरी, रही किनारे बैठि ।
२. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ।

IV. अलंकार पहचानिए :

१. मन कांचै नाचै वृथा, सांचै रांचै राम ।
२. तनिक सति जल सो मिटै, जैसे दूध उफान ।

V. दोहों के लक्षण से इन दोहों की तुलना कीजिए :

१. जो गरीब सो हित करै, धनि रहीम वे लोग ।
कहाँ सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ॥
२. जपमाला छापै तिलक, सरै न एकौ कामु ।
मन कांचै नाचै वृथा, सांचै रांचै राम ।

VI. इन दोहों को कंठस्थ कीजिए

योग्यता विस्तार :

- * इन कवियों के और कुछ दोहों को पढ़िए ।
- * तुलसीदास जी से रचित दोहों को संग्रहीत कीजिए ।



मुहावरे

मुहावरे- सामान्य अर्थ का बोध न कराकर विशेष अथवा विलक्षण अर्थ का बोध कराने वाले पदबन्ध को मुहावरा कहते हैं।

अर्थ और प्रयोग

नीचे कुछ बहु-प्रचलित मुहावरे, उनका अर्थ और वाक्य में प्रयोग दिया जा रहा है

१. श्रीगणेश करना (आरम्भ करना)- मैंने आज इस कार्य का श्रीगणेश किया है।
२. अंग-अंग ढीला होना (बहुत थकना)-सारा दिन परिश्रम करने से मेरा अंग-अंग ढीला हो गया है।
३. अंग-अंग फूले न समाना (बहुत प्रसन्न होना)- परिक्षा में उत्तीर्ण होने का समाचार सुनकर उसका अंग-अंग फूले न समाया।
४. अंगार उगलना (जली-कटी सुनाना, क्रोध में कठोर वचन कहना)- जो कुछ कहना है शान्ति से कहो। अंगार उगलने से कोई लाभ नहीं
५. अंगूठा दिखाना (साफ इंकार कर देना)- मुझे तो अब तुम्हारी सहायता की आवश्यकता पड़ी है और तुम अभी से अंगूठा दिखाने लगे हो।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति दो शब्दों-लोक और उक्ति से बना है। इसका अर्थ है लोगों में प्रसिद्ध उक्ति। लोकोक्ति का आधार कोई कहानी या घटना होती है।

लोकोक्ति और मुहावरों में अन्तर

लोकोक्ति और मुहावरों में प्रमुख अन्तर यह है कि लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है। उसमें एक विचार, भाव या सत्य की पूर्ण अभिव्यक्ति होती है। मुहावरा एक वाक्यांश होता है। वह अपने आप में पूर्ण नहीं होता। वाक्य में प्रयोग करते समय वह उसी का अभिन्न अंग बन जाता है किन्तु लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होने के कारण वाक्य से अलग-थलग रहती है।

लोकोक्तियाँ-अर्थ और वाक्य प्रयोग

१. अधजल गगरी छलकत जाए (ओछा आदमी बहुत घमंड करता है)- रमेश ने शहर में जाकर चार अक्षर पढ़ लिए तो अधिकचरे ज्ञान का रोब जमाता फिरता है। सच है अधजल गगरी छलकत जाए।
२. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता (अकेला व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकता)- यदि एक आदमी ईमानदार है तो वह बेईमानी खत्म नहीं कर सकता। कभी अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
३. अन्धा क्या चाहे दो आँखें (अभीष्ट वस्तु प्राप्त करना)- मुझे पुस्तक की आवश्यकता थी। सीता बोली, मेरे पास एक पुस्तक पड़ी है, लोगे। मैंने कहा-अन्धा क्या चाहे दो आँखें।
४. अन्धों में काना राजा (अशिक्षितों में कम पढ़े-लिखे का सम्मान पाना)- अनपढ़ गँवारों में केवल शिवसागर ने आठवीं तक शिक्षा पाई है। सब उसको विद्वान समझते हैं। ठीक है भाई, अन्धों में काना राजा।

निबन्ध-रचना

निबन्ध के कलेवर को तीन भागों में बाँटा जाता है-१. विषय-प्रवेश अथवा भूमिका, २. मध्य भाग तथा ३. अन्त अथवा उपसंहार।

(१) विषय प्रवेश अथवा भूमिका- निबन्ध का आरंभ कई प्रकार से किया जा सकता है। वह सजीव एवं आकर्षक होना चाहिए। अंग्रेजी में एक सूक्ति है—A well began is half done अर्थात् 'उचित प्रारम्भ आधी सफलता है।' यदि आरम्भ अच्छा है तो इसका प्रभाव पाठक और परीक्षक पर अच्छा पड़ता है। कई लोग इसका आरम्भ किसी सूक्ति से करते हैं। आरम्भ में विषय का महत्व भी स्पष्ट किया जा सकता है। किसी विषय पर सामान्य चर्चा द्वारा भी इसे आरम्भ किया जा सकता है।

२. मध्य भाग - यह भाग मुख्य विषय से सम्बद्ध तथा विस्तृत होता है। इसमें विषय के सभी पक्षों को प्रस्तुत करना होता है। निष्पक्ष, सन्तुलित एवं तथ्याधारित बात ही लिखनी चाहिए, कोई भी गलत सूचना नहीं देनी चाहिए। अनावश्यक विस्तार और आवृत्ति से बचना चाहिए। विषयान्तर और असम्बद्ध कथन से भी दूर रहना चाहिए। विषय को सुसम्बद्ध एवं व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना उपयोगी होता है। यहाँ सभी कोणों से विषय का स्पष्टीकरण और पक्ष-विपक्ष का सन्तुलित विकास अपेक्षित होता है।

३. उपसंहार और अन्त - इस भाग में अत्यधिक सावधानी से काम लिया जाना चाहिए। उपसंहार जितना आकर्षक, सुंदर और संक्षिप्त होगा, निबन्ध उतना ही अधिक प्रभावशाली होगा। अतएव इस भाग को भी भूमिका की भाँति विभिन्न विधियों द्वारा सजीव बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। अपनी सम्मति या निष्कर्ष देकर, निबन्ध का सारांश लिखकर, विषय के प्रतिपादन में किसी के विचार उद्धृत करके या कोई कथन लिखकर अथवा विषय का महत्व बतलाते हुए निबन्ध के अन्त को आकर्षक, हृदयग्राही एवं प्रभावशाली बनाया जाना चाहिए। याद रखिए अन्त भला सो भला।

निबन्ध के प्रकार - स्थूलतः निबन्ध चार प्रकार के होते हैं -

१. विवरणात्मक, २. वर्णनात्मक, ३. विचारात्मक और ४. भावात्मक।

१. विवरणात्मक - ऐसे निबन्धों में घटनाओं, कथाओं, यात्राओं, संस्मरणों आदि का विवरण प्रस्तुत किया जाता है। इसके लिए प्रसाद शैली विशेष उपयोगी है।

२. वर्णनात्मक - ऐसे निबन्धों में नगर, दृश्य, वस्तुओं, ऋतुओं, आदि का चित्रण रहता है। इनमें निबन्धकार को कल्पना, विचार और अनुभूति का आश्रय लेना पड़ता है।

३. विचारात्मक - इस प्रकार के निबन्धों में निबन्धकार को विषय के पक्ष और विपक्ष में, उसके हानि और लाभ के विषय में विचार प्रस्तुत करने होते हैं। विज्ञान के लाभ और हानियाँ, चलचित्रों का समाज पर प्रभाव आदि विषयों पर लिखे जाने वाले निबन्ध इसी कोटि में आते हैं।

४. भावात्मक निबन्ध - इस प्रकार के निबन्धों में भावों की प्रधानता होती है। इनमें विचार और कल्पना का स्थान गौण है। ऐसे निबन्धों में - 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत;' 'होड़ है सोई, जो राम रचि राखा' आदि आते हैं।

यहाँ उदाहरणार्थ कुछ निबन्धों को दिया जा रहा है-

१. आदर्श विद्यार्थी

'विद्यार्थी' शब्द की रचना दो शब्दों - 'विद्या' और 'अर्थी' से हुई है। इसका अर्थ है विद्या की इच्छा रखने वाला। यों तो व्यक्ति सारा जीवन ही कुछ-न-कुछ सीखता रहता है। उसका अध्ययन सारी आयु चलता रहता है, परन्तु बाल्यकाल ही विद्याध्ययन का महत्त्वपूर्ण समय है। इस अवस्था में विद्यार्थी संसार की सभी चिन्ताओं से मुक्त हो विद्याध्ययन में पूरा समय व्यतीत कर सकता है। इसके पश्चात् उस पर जीवन का सारा

बोझ आ पड़ता है और वह अध्ययन के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पाता। इसलिए जो विद्यार्थी इस काल में ठीक प्रकार से अध्ययन करते हैं, वे दूसरों से आगे बढ़ जाते हैं और सारा जीव सुख से व्यतीत करने में सफल होते हैं।

आदर्श विद्यार्थी परिश्रमी, अनुशासनप्रिय, सत्यनिष्ठ, परोपकारी और सच्चरित होता है। वह जानता है कि परिश्रम का बहुत महत्व है। इस संसार में जितने भी महान् व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने परिश्रम के बल पर ही महानता प्राप्त की है। आलसी विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर ही नहीं सकता।

केवल पुस्तकों के अध्ययन में लगे रहना ही पर्याप्त नहीं। अपने शरीर, मन और बुद्धि सभी का विकास करना आदर्श विद्यार्थी अपना लक्ष्य मानता है क्योंकि इन सबके समुचित विकास से ही व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास सम्भव है। रुग्ण शरीर वाला व्यक्ति भली-भाँति शिक्षा प्राप्त कर ही नहीं पाता। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। अतः आदर्श विद्यार्थी केवल पुस्तकों को रटने में ही सारा समय व्यतीत नहीं करता, बल्कि अपने शरीर का भी ध्यान रखता है। विद्यार्थी के लक्षण इस प्रकार बताए गए हैं।

“काक चेष्टा वकोध्यानम् श्वानिद्रा, संयमी, श्रमी।

अल्पाहारी, गृह त्यागी, विद्यार्थिनः सप्तलक्षणम्॥

परिश्रमी और अध्ययनशील विद्यार्थी सदा अनुशासन में रहता है। उसे अनुशासन का महत्व ज्ञात होता है। विद्यार्थी जीवन में तो अनुशासन का महत्व और भी अधिक है। यह तो भावी जीवन की तैयारी का काल है। यह तैयारी तभी सम्भव है जब विद्यार्थी अनुशासन में रहेगा; अपना कार्य समय पर करेगा; खेलने के समय खेलेगा, पढ़ने के समय पर पढ़ेगा। आदर्श विद्यार्थी का व्यवहार सदा श्लाघनीय रहता है। माता-पिता और गुरुजनों का उचित

आदर करना वह अपना कर्तव्य समझता है। बड़ों का आदर करना और छोटों के साथ प्रेम का व्यवहार करना उसका स्वभाव बन जाता है। सदा सत्य बोलना आदर्श विद्यार्थी अपना धर्म समझता है। लोभ में पड़कर या भय के कारण वह कभी भी झूठ नहीं बोलता। उसमें अच्छे चरित्र की सभी बातें होती हैं। वह देश के हित को सर्वोपरि रखता है। महान् पुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर जनसेवा के लिए अपने आप को लगा देने में उसे हर्ष का अनुभव होता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि आदर्श विद्यार्थी होना यद्यपि कठिन है, किन्तु प्रयत्न करने पर वे गुण अवश्य विकसित किए जा सकते हैं जो आदर्श विद्यार्थी में होने चाहिए। वस्तुतः कोई अच्छा गुण धारण करने में सदा कठिनाई होती है।

२. दूरदर्शन

विज्ञान ने बहुत उन्नति की है। अनेक ऐसे अद्भुत आविष्कार हुए हैं जिन से जीवन के स्वरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन आ गया है। दूरदर्शन भी ऐसे आविष्कारों में से एक है जिसने आधुनिक जीवन को काफी प्रभावित किया है।

‘दूरदर्शन’ शब्द की रचना ‘दूर’ और ‘दर्शन’ - इन दो शब्दों से हुआ है। अर्थ स्पष्ट है दूर की वस्तु, व्यक्ति आदि के चित्र तो देख ही सकते हैं, साथ ही ध्वनि भी सुन सकते हैं। यह रेडियो का विकसित रूप है। रेडियो के द्वारा तो आकाशवाणी केन्द्र से प्रसारित ध्वनि ही सुनी जा सकती है, पर दूरदर्शन के माध्यम से ध्वनि के साथ-साथ चित्र भी देखा जा सकता है। इस कारण दूरदर्शन का प्रभाव रेडियो की अपेक्षा अधिक होता है।

दूरदर्शन ने अधुनिक जीवन को बहुत प्रभावित किया है। विशेषतः भारत जैसे देश में जहाँ की अधिकतर जनसंख्या अशिक्षित है और अनेक समस्याएँ मुँह बाए खड़ी है, इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है। इसी के द्वारा जन-साधारण को शिक्षित किया जा सकता है। कृषकों को खेती के आधुनिकतम साधनों के उपयोग की शिक्षा दी जा सकती है। सिंचाई कैसे और कब करनी चाहिए? कीटनाशक औषधियों का प्रयोग कैसे करना चाहिए? विभिन्न फलदार पेड़ों को कैसे लगाएँ और उनकी देखभाल कैसे करें? यह सारी जानकारी दूरदर्शन द्वारा प्रभावशाली ढंग से दी जा सकती हैं।

हमारे समाज में मद्य-पान, बाल-विवाह आदि अनेक कुरीतियाँ हैं। अशिक्षा, जनसंख्या में लगातार वृद्धि आदि अनेक समस्याएँ हैं। कुरीतियों के दुष्परिणामों को दर्शा कर तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी देकर जन-सामान्य को दूरदर्शन के माध्यम से प्रभावकारी ढंग से शिक्षित किया जा सकता है। अनौपचारिक शिक्षा का यह बहुत अच्छा माध्यम है। साथ ही औपचारिक शिक्षण में भी इसकी उपयोगिता निर्विवाद है। कुछ कुशल अध्यापकों से विभिन्न विषयों पर पाठ तैयार करवाकर दूरदर्शन पर प्रस्तुत किए जा सकते हैं और किए जा रहे हैं। इसका लाभ दूर-दूर बसे गाँव के उन छात्रों को भी प्राप्त हो सकता है जिनके पास सुविधाओं का अभाव है।

मनोरंजन के क्षेत्र में भी इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि तो यह है कि आप घर के भीतर बैठे-बैठे विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का रसास्वादन कर सकते हैं। कोई कवि-सम्मेलन हो, चलचित्र हो, या एकांकी का मंचन हो, इसे दूरदर्शन पर घर बैठे-बैठे देखा जा

सकता है। महान् नेता का भाषण जन -साधारण के नाम संदेश आदि सुन तो सकते ही है, संदेश देने वाले नेता को देख भी सकते है। दूरदर्शन पर धारावाहिकों(सीरियलों) ने धूम मचा रखी है।

ऊपर हमने दूरदर्शन के लाभ एवं उपयोगिता का स्वरूप स्पष्ट किया है। यह इसका एक पक्ष है। इसका दूसरा पक्ष भी है। इसने एक ओर जहाँ मनोरंजन, शिक्षा आदि के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, दूसरी ओर इससे लोगों में निष्क्रियता, आलस्य, पंगुता एवं वैयक्तिकता पनपने लगी है। उसमें सामाजिकता समाप्त-सी होती दिखाई दे रही है। सायंकाल का अधिकांश समय घर की चारदीवारी में गुजारने के कारण व्यक्ति विशेष अपने पड़ोसियों तक से परचिय पाने में असमर्थ रहता है। दूरदर्शन के कारण पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन आ रहा है।

इतना ही नहीं, लूट, हत्या, डकैती आदि की घटनाओं में वृद्धि के कारणों में से दूरदर्शन भी एक है। इन घटनाओं को प्रभावी ढंग से दूरदर्शन पर होता हुआ देखकर दर्शक इन्हें स्वयं करके देखने के लिए उत्सुक हो उठता है। कई बार तो केवल मनोरंजन के लिए इन घटनाओं में वह प्रवृत्त हो जाता है। इससे वह सदा के लिए असामाजिक कार्यों को करने में रूचि लेने लगता है और समाज का उपयोगी सदस्य बनने की बजाय समाज को हानि पहुँचाने के लिए तत्पर रहता है। दूरदर्शन के अत्यधिक प्रयोग से आँखों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः इसका सीमित उपयोग किया जाना चाहिए।

इस प्रकार दूरदर्शन वर्तमान जीवन में एक आवश्यक अंग बनकर रह गया है।

३. हमारे राष्ट्रीय पर्व

पर्वों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। इनसे हमारे जीवन में नीरसता दूर होती है और रोचकता एवं आनन्द की वृद्धि होती है। दिन आते हैं और चले जाते हैं। जीवन व्यतीत होता जाता है। उनमें कोई परिवर्तन नहीं। वैसे भी सभी दिन समान नहीं होते। हमारे जीवन में कोई-न-कोई दिन ऐसा होता है, जिसे भुलाने पर भी, हम भुला नहीं पाते। इसी प्रकार किसी जाति, वर्ग या सम्प्रदाय से यदि किसी दिन का सम्बन्ध है तो उसका महत्व उस सम्प्रदाय एवं वर्ग के लोगों के लिए बढ़ जाता है दीपावली, दशहरा, होली, ईद, क्रिसमस, गुरुपर्व आदि पर्व हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख आदि सम्प्रदायों से सम्बन्ध रखते हैं। अतः ये जातीय पर्व हैं। कुछ पर्व ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध केवल एक जाति से न होकर समस्त राष्ट्र से होता है। ऐसे पर्वों में उस राष्ट्र के सभी नागरिक सोत्साह भाग लेते हैं। ऐसे पर्वों में गणतन्त्र दिवस, स्वतन्त्रता-दिवस, गाँधी - जन्मोत्सव, बाल- दिवस और बलिदान - दिवस प्रमुख हैं।

गणतन्त्र-दिवस २६ जनवरी को प्रतिवर्ष अत्यन्त ही धूमधाम एवं उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। २६ जनवरी सन् १९३० को रावी नदी के तट पर पं. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में यह घोषणा की गई थी कि हम पूर्ण स्वराज्य लिए बिना शान्त नहीं होंगे। हमारा देश १५ अगस्त, १९४७ को स्वाधीन घोषित किया गया था, परन्तु पूर्ण स्वतन्त्रता इसे २६ जनवरी, १९५० को ही प्राप्त हुई जब इसने अपने आप को धर्मनिरपेक्ष, सर्वसत्ता -संपन्न गणतन्त्र घोषित कर नये संविधान को लागू किया था।

तब से यह गणतन्त्र - दिवस के रूप में भारत की राजधानी दिल्ली में विशेष सजधज के साथ आयोजित किया जाता है। भारत के राष्ट्रपति सेना के तीनों अध्यक्षों की सलामी लेते हैं तथा भारत की विविध क्षेत्रों में हुई प्रगति एवं संस्कृति को दर्शाने वाली झाँकियाँ प्रस्तुत की जाती हैं।

हमारा दूसरा राष्ट्रीय पर्व है स्वतन्त्रता-दिवस। सैकड़ों वर्षों की दासता के बाद हमारा देश १५ अगस्त, १९४७ को स्वतन्त्र हुआ था। यह स्वतन्त्रता हमें अनायास ही नहीं मिल गई। इसके लिए भारतवासियों को अपना रक्त-दान करना पड़ा था तभी जाकर स्वतन्त्रता प्राप्त हुई थी। अतः इस दिन की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारित करते हैं और १५ अगस्त को प्रातः लाल किले की प्राचीर से ध्वजारोहण के अनंतर प्रधानमंत्री राष्ट्र को सम्बोधित करते हैं।

बाल-दिवस १४ नवम्बर को प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। १४ नवम्बर स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, तप और त्याग की मूर्ति पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म - दिवस भी है। पं.नेहरू को बच्चों से विशेष प्रेम था। अतः उन्होंने अपने जन्म-दिन को बाल-दिवस के रूप में मनाना ही उचित समझा था।

इस प्रकार ये पर्व राष्ट्रीय जीवन में नई चेतना एवं प्रेरणा का स्रोत बनते हैं। इनके माध्यम से जीवन की नीरसता तो समाप्त होती है, राष्ट्र की समस्याओं पर विचार करने, विविध क्षेत्रों में हुई उन्नति की समीक्षा करने, राष्ट्र की स्वतन्त्रता को बनाए रखने तथा उत्तरोत्तर समृद्धि का संकल्प लेने का भी अवसर मिलता है।

अलंकार

‘अलंकार’ का अर्थ होता है आभूषण या गहना। आभूषणों से शरीर की शोभा बढ़ जाती है। इसी प्रकार, अलंकार से काव्यरूपी शरीर सजाया जाता है। आभूषण सोने, चाँदी आदि से बनते हैं और अलंकार वर्णों या शब्दों से, क्योंकि शब्द के माध्यम से ही अर्थ या भाव प्रकट होता है।

शब्द और अर्थ अभिन्न हैं। फिर भी, संकुचित अर्थ में शब्द और अर्थ को भिन्न-भिन्न माना जाता है। इस दृष्टि से, अलंकार के मुख्यतः दो भेद होते हैं :

(१) शब्दालंकार और (२) अर्थालंकार ।

शब्दालंकार में शब्दगत अलंकार होता है, अर्थात् शब्दों के क्रम या लय पर ही अलंकार निर्भर रहता है। इसलिए शब्दालंकार में शब्द की प्रधानता रहती है।

अर्थालंकार में शब्दगत अर्थालंकार होता है। अर्थात् अलंकार अर्थ पर निर्भर रहता है। इसलिए अर्थालंकार में शब्द के अर्थ की प्रधानता रहती है।

अब, हम भिन्न-भिन्न प्रकार के अलंकारों पर विचार करें।

शब्दालंकार

१. अनुप्रास- अनुप्रास का अर्थ होता है समान वर्णों (अक्षरों का) दुहराना या बार-बार आना। इससे काव्य में संगीतमयता की सृष्टि होती है।

(क) जाहि अनादि, अनन्त, अखण्ड, अछेद, अभेद बनावै ।

यहाँ ‘अ’ का अनुप्रास है। ‘अ’ का पाँच बार आना एक ध्वनि प्रकट करता है-

(ख) घहरत घण्टा धुनि धमकत धौंसा करि साका।

(ग) कंकन किंकिनि नूपुर बाजाहिं

२. यमक- यमक में एक ही आकारवाला शब्द (स्वर-व्यंजन-समुदाय) कम-से-कम दो बार आता है, पर भिन्न-भिन्न अर्थों में । एक-दो उदाहरण लें ।

(क) कबिरा सोइ पीर है, जे जाने पर पीर ।

जे पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर ॥

इस साखी में 'पीर' चार बार आया है, पर भिन्न-भिन्न अर्थों में- 'पैगम्बर', 'दुःख' और 'निर्दय' के अर्थ में ।

(ख) कनक कनक तें सौ गुनी मादकता अधिकाइ ।

उहि खाये बौरात नर, इहि पाये बौराइ ॥

यहाँ 'कनक' क प्रयोग दो बार हुआ है, पर भिन्न-भिन्न दो अर्थों में- 'धतूरा' और 'सोना' के अर्थ में ।

३. श्लेष- श्लेष में एक शब्द एक ही बार आता है, पर भिन्न-भिन्न दो अर्थों में; जैसे:

पानि गये न ऊबरै, मोती मानुस चून ।

यहाँ 'पानि' के तीन अर्थ हैं-चूने के पक्ष में जल, मोती के पक्ष में कान्ति और मनुष्य के पक्ष में प्रतिष्ठा। इसलिए यहाँ 'श्लेष अलंकार' है ।

४. वक्रोक्ति - वक्रोक्ति का अर्थ है 'वक्र उक्ति', अर्थात् कोई बात तोड़-मरोड़कर या घुमा-फिराकर कहना। इसलिए वक्रोक्ति अलंकार में कहनेवाले और सुननेवाले एक ही शब्द का भिन्न-भिन्न अर्थ अपने तात्पर्य से प्रकट करते हैं। एक-दो उदाहरण लें

को तुम ? हैं घनश्याम हम, तो बरसौ कित जाय ।

नहि मनमोहन हैं पिये, क्यों पकरत तब पाँय ॥

राधा कृष्ण से पूछती है-तुम कौन हो ? कृष्ण का उत्तर है-मैं घनश्याम हूँ । वक्रोक्ति अलंकार निपुण हैं । इसलिए वे 'घनश्याम' का

अर्थ 'कृष्ण' समझकर भी कृष्ण से नाराज़ होने के कारण चिढ़ प्रकट करने के लिए 'घनश्याम' का अर्थ 'काला बादल' करते हुए कहती है-तब तो आपको कहीं और बरसना चाहिए यह उत्तर सुनकर कृष्ण कहते हैं-नहीं, मैं मनमोहन हूँ । राधा फिर जानकर भी 'मनमोहन' का एक दूसरा अर्थ-मन मोहनेवाला-करती हुई वक्रोक्ति में कहती है-यदि आप मनमोहन है तो आपको चाहिए मन मोहना, पाँव पड़कर किसी को मनाना-फुसलाना नहीं। इस प्रकार, यहाँ वक्रोक्ति अलंकार द्वारा उत्तम श्रेणी के श्रृंगाररस की सृष्टि की गयी है ।

५. लाटानुप्रास- लाटानुप्रास में किसी शब्द या वाक्यखंड की आवृत्ति होती है, अर्थात् उसे दुहराया जाता है, पर पहले शब्द का अर्थ सामान्य होता है और दूसरे का विशेषता से युक्त । ऐसा होता है तात्पर्य या अन्वय में भेद के कारण; जैसे :

पंकज तो पंकज, मृगांक भी है मृगांक री प्यारी ।

यहाँ पहले 'पंकज' का सामान्य अर्थ है 'कमल' और दूसरे 'पंकज' का विशेषताहीन 'कमल' जो कीचड़ जैसी गंदी वस्तु से उत्पन्न होता है ।

अर्थालंकार

१. उपमा- उपमा का अर्थ होता है-दो असमान वस्तुओं की तुलना कर उसमें कुछ साम्य दिखाना ।

जिस वस्तु की तुलना की जाती है उसे 'उपमेय' कहते हैं और जिस वस्तु से तुलना की जाती है उसे 'उपमान' । उपमा में उपमेय तथा उपमान की तुलना की जाती है। उपमा में सादृश्यवाचक शब्द (साम्य का बोध करानेवाले शब्द- 'सा', 'समान', 'तरह') का प्रयोग होता है । उपमा का एक नमूना देखे :

कथनी मीठी खाँड़-सी, करनी विष की लोय-कबीर

मधुर वचन खाँड़ के समान है । मधुर वचन और खाँड़ में कुछ साम्य है, क्योंकि ये दोनों मीठे होते हैं। यहाँ 'सी' (समान) से प्रकट हो जाता है। इसलिए 'खाँड़-सी' में उपमालंकार है ।

२. उत्प्रेक्षा- उत्प्रेक्षा में, उपमा के समान ही, दो असमान वस्तुओं की तुलना की जाती है और उनमें साम्य दिखाया जाता है, पर साम्य की मात्रा अधिक होती है और असाम्य की मात्रा बहुत कम। यही कारण है कि उत्प्रेक्षा में सादृश्यवाचक शब्द (मानो, जैसे, ऐसे) का प्रयोग किया जाता है। जैसे :

सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात ।

मनों नीलमनी सैल पर, आतप परयो प्रभात ॥-बिहारी

कृष्ण के काले शरीर की तुलना नीलमणि पर्वत से की गई है और पीले कपड़े की तुलना प्रातः कालीन सूर्य की किरणों से । यहाँ दो असमान वस्तुओं की तुलना करके उनमें साम्य दिखाया गया है। किन्तु इन वस्तुओं के बीच असाम्य बना ही हुआ है जो 'मनों' से अभिव्यंजित हो रहा है ।

३. रूपक - उपमा और उत्प्रेक्षा के समान ही, रूपक में भी दो असमान वस्तुओं की तुलना की जाती है। इसलिए रूपक में भी उपमेय और उपमान का रहना आवश्यक है, पर इसमें उपमेय और उपमान के बीच कोई असाम्य या भिन्नता रहती ही नहीं । दो असमान वस्तुएँ अपना या भिन्नता छोड़कर यहाँ बिल्कुल एक हो जाती हैं । रूपक में सादृश्यवाचक शब्दों का प्रयोग नहीं होता। रूपक कल्पना की चरम सीमा है। इसका अर्थ यह है कि कवि कल्पना की सहायता से एक नये सत्य और सौंदर्य की खोज करता है । वह छिपे हुए चिरन्तन सत्य (भिन्नता में ऐक्य का भाव) के दर्शन करता और कराता भी है। इस प्रकार, रूपक उत्तम कोटि का अलंकार है ।

४. **प्रतीप-** प्रतीप का अर्थ है 'उलटा'। इसलिए प्रतीप अलंकार में प्रसिद्ध उपमान को उपमेय बना दिया जाता है और उपमेय को उपमान । सामान्यतया मुख की उपमा चाँद से दी जाती है, पर यदि स्वयं चाँद की उपमा मुख से दी जाए, तो वह प्रतीप अलंकार हो जाएगा; जैसे :

तुव प्रताप सम सूर्य है, जस-सम सोहत चंद ।

यहाँ सूर्य को प्रताप के समान और यश को चाँद के समान माना गया है । इसलिए यहाँ प्रतीप अलंकार है ।

५. **अपहनृति-** अपहनृति का अर्थ होता है 'छिपाना'। इसलिए इस अलंकार में सत्य को (अर्थात् उपमेय को) छिपाकर उस सत्य को (अर्थात् उपमान को) प्रमुखता दी जाती है; जैसे :

नहिं पलास के पुहुप ये है ये जरत अंगार।

ये जलते अंगार है; पलास के पुष्प नहिं । यहाँ पलास को छिपाकर अंगार की स्थापना की गई है, इसलिए अपहनृति अलंकार है ।

६. **अनन्वय-** अनन्वय में उपमेय और उपमान एक ही होते हैं, भिन्न-भिन्न नहीं; जैसे :

(क) सुंदर नन्दकिशोर से सुन्दर नन्दकिशोर।

(ख) तुव समान एक तोंही माधव ।

७. **विभावना-** विभावना का अर्थ होता है विशिष्ट भावना या कल्पना । इसलिए इसमें बिना कारण के ही कार्य की उत्पत्ति होती है; जैसे :

बिनु पद चलै सुनै बिनु काना ।

८. **विशेषोक्ति** - विशेषोक्ति की उक्ति (कथन) में एक विशेषता रहती है और वह विशेषता है कारण के रहते हुए कार्य की उत्पत्ति न होना। यह विभावना का उलटा होता है' जैसे:

मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलाहिं विरंचि सम।

९. **विरोधाभास**- विरोधाभास में वास्तविक विरोध न रहते हुए भी विरोध का आभास प्रकट किया जाता है; जैसे:

ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रँग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय ।

काले रंग में डूबकर उजला होना-इन दोनों में विरोध मालूम पड़ता है, पर यह विरोध यहाँ वास्तविक नहीं है। क्यों ? इसलिए कि 'स्याम रँग' का अर्थ है 'कृष्ण-प्रेम' और 'उज्ज्वल होय' का अर्थ है 'निर्मल होना' । वास्तविक अर्थ समझ लेने पर विरोध तुरंत दूर हो जाता है।

९. **अतिशयोक्ति** - जहाँ उपमेय का वर्णन सीमा से अधिक बढ़ा - चढ़ाकर किया जाता है वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है ।

उदाहरण:

१. हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग ।

लंका सिगरी जरि गई, गए निसाचर भाग ॥

यहाँ हनुमान की पूँछ में आग लगने (कारण) से पहले ही लंका का जलना और राक्षसों का भाग जाना (कार्य) वर्णित है । कारण से पहले कार्य होना अतिशयोक्ति है।

